آراو
پیش ماست



भार्या न
स्य जी

... با بکمی پے آید
در چشم ... کمی پے آید
الطاف ... پے آید
لطف پیران ... کمی پے آید
ز دور دوران ہمین کو بکمی پے آید

क्षणं बालो भूत्वा क्षणमपि युवा क
म रसिकः क्षणं वित्तैर्हीनः क्षणम
पिच सम्पूर्णविभवः ॥ जराजीर्णै रं
गै र्नट इव वली मंडित तनु र्नरः सं
सारान्ते विशति यमधानी जवनिका
म् ॥११२॥

گہي مفلس گہے صاحب از مرد	ہي طفل و گہے عاشق جوان مرد
گہے ترسان ز خوف حشر میگرد	ہي پيري گہے ياري گرے گرد

अहौ वा हारे वा बलवति रिपौ वा
सुहृदि वा मणौ वा लोष्टे वा कुसु
म शयने वा दृषदि वा ॥ तृणे वा
स्त्रैणे वा मम सम दृशो यान्ति
सा: क्वचित्पुण्यारण्ये शिव
शिवेति प्रलपत: ॥११३॥

شود دشمن و یار دوست یکسان و خوش	ز مار یا مالا یي خوش باشد
زمین با حسن یا زنہا و یا خنگل تیرہ تا ز	لبستر گل تیرہ تا زہ
شود و ردم بشلیو شیو شیو ہمیں جو آن کہ	زمولا را بدل آرم

इति श्रीभर्तृहरिकृत वैरा
सम्पूर्णम

بودان عمر ز جسم مثل آب کوزه شکسته	بسا افسوس انسان کار خود ان ...

...जति तावद शेष गुणा करं पुरुष
रत्न मलं करणं भुवः तदपि तत्क्षण
भंगि करोति चेदहह कष्टम पंडित
ना विधेः॥२०॥

چو بر بها طلسم آن ترا بے حسن بین آراست بدی بیهتر کردی جاودانی جسم انسان را	بعقل ... بیهتر بین جسم آراست تحیل ... نقش ترا انسان ... آراست

गात्रं संकुचितं गति र्विगलिता भ्र
ष्टा च दन्ता वलिः दृष्टि र्नश्यति व
र्धते बधिरता वक्त्रं च लालायते॥
वाक्यं नाद्रियते च बान्धव जनो
भार्या न शुश्रूयते हा कष्ट पुरुष
स्य जीर्ण वयसः पुत्रोप्यमित्रा
यते॥२१॥

این چه حالیست که جسم بکمی مے آید همه دندان شکستند خالی دهن ثقف دهن هست روان لطف دل خوش رفت همه این حالت پیریست که تو می بینی گشت گنهشام همین ترجمه از بهر ترهر	تیزی حیات با کمی مے آید ضعف در جسم ... بکمی مے آید لطف الطاف ... بکمی مے آید لطف پیران ... بکمی مے آید ذور دوران همین کو بکمی مے آید

به انسان نیست یک لمحه آرام	بود در عمر خویش چون موج بحر ناکام

ब्रह्मज्ञान विवेकिनोऽमलधियः कु
र्वन्त्यहो दुष्करं यन्मुञ्चं त्युप भोग
कांचन धनान्येकान्ततो निःस्पृहाः
न प्राप्तानि पुरा न संप्रति न च प्रा
प्तौ दृढ प्रत्ययो वाञ्छा मात्र परि
ग्रहा ण्यपि परं त्यक्तुं न शक्ता वयम्
॥१०८॥

به صاحب عقل و اقف باز حق افسوس می آید
زر و زیور زن و پوشش صندل اسپ نازک
بماند مثل برگ خشک دل در کس نه پیدا رو
نه حاصل شد کنون هم بود آینده چه امید است
کنند گفتند شام گر از ترک دنیا تا چه پیدا شد

کنند گو ترک حب ما صدق بس افسوس می آید
ز خوشبو چی قبول ترک بس افسوس هی آید
مرا حاصل شده زنها رس افسوس می آید
همیکیت گر قسمت خویش بس افسوس می آید
و سیله بر ترک بد عقلان زبس افسوس می آید

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देह
म् ॥ आयुः परिस्रवति भिन्न घटा
दि वाम्भो लोकस्तथा प्यहितमा
चरतीति चित्रम् ॥१०९॥

چه شیر این پیر سالی مثل با غران همی آید	عدو لشکر نما بیماریها بران همی آید

शेष दुःखव्याप्ति करं विषमे यौवने
विप्रयोगः॥ नारीणामप्यवज्ञा वि
लसति नियतं वृद्धभावोऽप्यसाधुः
संसारे रे मनुष्या वदति यदि सुखं
स्वल्पमप्यस्ति किंचित्॥१०६॥

بجا نا پاک پر بول جو برآ زپے
کشیده دست و پاگذر روز مشکل
جوانی صدمه از فرقت زنانها
به پیری از زنان محجوب باشد

بماند نطفه در رحم پر آزپے
ببین طفلی چه سان گذرد ز مشکل
چه باید وصل نطفه بول آسا
کشیده سر نگون مردود باشد

ببا افسوس جانان کیسے ترا آرام شد حاصل
نہ فہمی ہمی آری تو دل پاکن بر بے اصل

आयुर्वर्षशतं नृणां परिमितं रात्रौ
तदर्धं गतं तस्यार्धस्य परस्य चार्द्ध
मपरं बालत्व वृद्धत्वयोः॥ शेषं व्या
धि वियोग दुःख सहितं सेवादि-
भिर्नीयते जीवे वारितरंग चञ्चल
तरे सौख्यं कुतः प्राणिनां ॥१०७॥

عمر انسان صد سال شمردند
بباقی حصه سه ترکیب دادند
ببازی طفلی پیری در ضعیفی

و نصف آن بشب در خواب بردند
جوانی طفلی و پیری بخواب است
جوانی رغبت در کار شهوتی

घा॥१२४॥

چو شد پیدا که خوف مرگ آمد — جوانی رفت پیری پیش آمد
ز خواهش از رفته دولت صبر — زنان بروند چون آتش از گیر
ز خود بینان علم دیگر آنرا — ز ما را خوش زمین جنگلا نرا
ز صحبت ربه عقل را جگانرا — ز تیزی جا یکے آرام جان را
ببین یک را ز یک باشد جدا شد — که بوده نشان ز یک یک را نشان شد

आधि व्याधि शतै जनस्य विविधैरा
रोग्य मुन्मूल्यते लक्ष्मी यत्र पतन्ति
तत्र निहत द्वारा इव व्यापदः॥
जातं जात मवश्य माशु विवशं मृ
त्युः करो त्यात्म सा तत्किं नाम नि
रंकुशेन विधिना यन्निर्मितं सु-
स्थितम्॥१०५॥

بدل وسواس جسم از خوف بیماری کند جان را
نماند تندرستی زر شود کرتا ملال آنرا
نشد پیدا که او را خوف مرگ از پیش میگذرد
نمیدانم که آن شی چیست کو یکسان همیگذرد

कृच्छ्रेणा मेध्य मध्ये नियमितत
नुभिः स्थीयते गर्भ मध्ये कान्ता वि

हच॥१०२॥

بدان تو القدر لذات دنیا را که می بینی
همینک مرگ و پیدایش کند بند و همین در کار

بدان فانی همه را جای خوف است آنکه می بینی
نهد دل به شیوه خویش را از نفس پروا نیست

धन्या नां गिरि कन्दरे नि वसतां ज्यो
तिः परं ध्यायता मानन्दा श्रुजलं पि
बन्ति शकुना निःशंक मङ्के शया॥
अस्माकं तु मनो रथो पर चित प्रा
साद वापी तट क्रीडा कानन केलि
कौतुक जुषा मायुः परि क्षीयते॥
॥१०३॥

خوشا مردان که گذراند بغار کوه عمر خویش
نترسد مرغ صحرا زیشان و نوشد آب چشمش را
بدان عمرم خیال و وهم جا هست بس دشوار

تجلی حق به بینند ریزد از چشم چون دل ریش
نهد بر دست و زانو پا و دوزند دیده چشمش را
که میگذرد نمیدانند به عیش و شوق و بس دشوار

आक्रान्तं मरणेन जन्म जरया वि
द्यु च्चलं यौवनं सन्तोषो धन लि
प्सया शम सुखं प्रौढां गना विभ्र
मैः॥ लोकै र्मत्सरि भि र्गुणा वनभु
वो व्यालै र्नृपा दुर्जनै रस्थैर्येण वि
भूति रप्युपहता ग्रस्तं न किं केन

چرا تو میکشی اے جان کمانرا
منبدای زن پئے ما تو میان را
زبوس پا کشید کوتاه را در سر نمید ارد

چو مرغ این خوش گلو واز دگمان را
که بیرونم ہر آنچه داری بجان را
عبادت شنوه گشتم دل مراد در دل میدارد

कौपीनं शत खराड जर्जर तरं कन्था
पुन स्ता दृशी निश्चिन्तं सुख साध्य भै
क्ष्यमशनं शय्या श्मशाने वने ॥
मित्रा मित्र समानता ति विमला
चिन्ता ति शून्यालये ध्वस्ता शेष मद
प्रमाद मुदितो योगी सुखं तिष्ठति ॥
॥१७१॥

زحد بوسیده دکو بین کهنه
ترد و قطع اکل از زمان گدائی
نباشد دوست اور انے ز دشمن
بدان تو این چنین را از خدا دوست

ز دلق بس شکسته نیز کهنه
پے آرام جائے مرده جائی
دلش خالی نے زفکر و بیم این
نشیند در جنگل خدا دوست

भोगा भंगुर वृत्तयो बहुविधा स्तेरे
व चायं भव स्तत्कस्येह कृते परि
भ्रमत रे लोकाः कृतं चेष्टितैः ॥आ
शा पाश शतोप शान्ति विशदं
चेतः समा धीयतां कामोच्छित्ति
वशे स्वधा मन यदि श्रद्धेयमस्म

तावन्मिराडी फरम्य मगल्भं कुलालव
भ्रमयति मनो नो जानीमः किमत्र
विधास्यति॥९८॥

بہبین بربہار راہ عاشقان عقلس کجا رفتہ
نمیدانم چہ میسازد دلم را او چہ خواہد ساخت

کلال آسا کمار د چرخ را بہرم چو گل بستہ
نمیدانم کسی از فعل اُو تا چہ خواہد ساخت

महेश्वरे वा जगतामधीश्वरे जना
र्दने वा जगदन्तरात्मनि॥ नवस्तु
भेद प्रतिपत्तिरस्ति मे तथापि भक्ति
स्तरुणेन्दुशेखरे॥९९॥

مہیشوری یا جگتا مہیشورے
نہ فرق دارم من جان دریں دو
میان شیو و در پیدا کنندہ
بدانستم نہ فرقی اندریں ست

جنا ر دنے باجگد نتراتمنی
ولے دل ما پاے شب شدہ
بہ چندانید یا فانی کمندہ
ولے دل ما بپاے شیو ترین ست

रे कंदर्प करं कदर्थयसि किं कोदण्डटं
कारैः रे रे कोकिल कोमलैः कलरवैः
किं त्वं वृथा जल्पसि मुग्धे स्निग्धविदग्ध
मुग्ध मधुरैर्लोलैः कटाक्षैरलं चे
तश्चुम्बित चन्द्रचूड चरण ध्याना
मृतं वर्तते॥१००॥

वस्त्र मभिनं भिक्षाटनं मराइनम् ॥
आसन्नं मरणं च मंगल समं यस्यां
समुत्पद्यते तां काशीं परिहृत्य हन्त
विबुधैरन्यत्र किं स्थीयते ॥ ८६ ॥

قیام بیشه خوردن میوه تازه یکی کوبین بجایے پیرهن بود رسیدن مرگ بس رحمت افزا ازین بهتر بنارس را مکان گیر	ریاضت کش ریاضت کیش زاده گدائی نان سپلے زیبا سیے تن بود نه بد بهتر ازین چیزے سرا افزا که دانا داند از احوال تفسیر

नायंते समयो रहस्य मधुना निद्रा
ति नाथो यदि स्थित्वा द्रक्ष्यति कु
प्यति प्रभु रिति द्वारेषु येषां वच: ॥
चेत स्तान पहाय याहि भवनं देवस्य
विश्वेशितु र्निर्दौवारिक निर्दयोक्त्य
परुष नि:सीम शर्मप्रदं ॥ ८७ ॥

نخلیه هست اکنون رو کنون است اتفا در آرام شهرم با بر ترا ایدل بنارس رو به پیشتر شیر	نشینی گر شود ناخوش چو بیند رو توای ناکام که انجا نیست دریا پیچ تو یا بی کار را با کام

प्रिय सखि विपद्दावाड्ग्रातप्रताप
परंपरातिपरिचपले चिन्ता चक्रे
निधाय विधि: खल: ॥ मृद मिवव

न सुचितं रम्येव विभ्रांगना मन्ये ते
परमेश्वराः श्रीरामसे ये चहान सेवा
ज्ञालैः ॥५८॥

پی آرام سنگ کوه غار کوه خانه را زبر اشجار نرم و خوش غذای جانفزائی را بانیحالت که گذرانند اول ادرا عجب گوئیم	زپوشش چه سست شجر و پوست از آهوی صحرا را روان هست خوش زن علم شهر گسارئی ما که بهتر هست از گفتار ما هر انچه میگوئیم

सत्यामेव त्रिलोकी सरिति हरशि
र श्च्युम्बनी च च्छटायां सद्धृत्ति कल्प
यन्त्यां वट विटप भवै वल्कलैः सत्
फलैश्च ॥ कोऽयं विद्वान् विपत्तिज्व
र जनित रुजा तीव्र दुःखासिकानां
वक्त्रं वीक्ष्येत दुःस्थे यदि हि न वि
भ्रयात्त्वे कुटुम्बेऽनुकम्पाम् ५९

کنار گنگ سر شیو بهست انجا خوشا بر پوست اش باشد لباس خویش و بهر دل گر پئی پید ایشس انس دهد دل گوشیفان را که هیچ از روضه برگرد	بمانند تا اندر بسی بهتر انجا فقیران را چنان دلکش لباس خوش که می آرد بدنیا الفت انس همین بهتر دهد دل در کنار گنگ جا گیرد

उद्यानेषु विचित्र भोजन विधि स्त्री
भाति तीव्र तपः कौपीन चरण सु

मदीये कामाग्नौ सुहृद नरसा भ्निष्य
ति चर्धे प्रती कारो व्याधे: सुखमीति
विपर्यस्यति जन: ॥६२॥

پی تشنگی میخورد آب سرد
به شهوت دهد رو پئے وصل زن
نفهمد که زین یک دوائے یکی است

پے گرسنه خوش غذا سرخ وزرد
نداند که نیک است با عمر کن
وزین جسم فانی تجسس کسی است

स्नात्वा गाङ्गैः पयोभिः शुचि कुसुम
फलै रर्चयित्वा विभो त्वा ध्येये ध्या
ने नियोज्य क्षिति धर कुहर ग्राव
पर्यंक मूले ॥ आत्मा रामः फलाशी
गुरु वचन रत स्त्वत्मा सादा त्स्मरा
रे दुःखान्मोक्ष्ये कदाहं तव चरण
रतो ध्यान मार्गैकमग्नः ६३

ز آب گنگ غسل و صندل بدست آرم
نشینم اندرون غاری ز مرشد قول یاد آرم

پرستش شیو کنم دل را ز دل در پای شیو دارم
خورم بر رستم از دنیا بیایت دل چنان دارم

शय्या शैल शिला गृहं गिरि गुहा
वस्त्रं तरूणां त्वचः सारंगाः सुहृ
दो ननु क्षिति रुहां वृत्तिः फलैः
कोमलैः ॥ येषां निर्झर मम्बु पा

ज्ञानं सतां मान मदादि नाशनं केषां
चिदेतन्मद मान कारणम् ॥ स्थानं
विविक्तं यमिनां विमुक्तये कामातु
राणा मति काम कारणम् ॥६०॥

لیاقت و تشریفان از پئے خاطر تو افسع شد
به تنهائی نشستن بهر عقلا سر حق دیدن

همینک در ظریفان از پئے تلخی توابع شد
همینک شهوتی را از پئے شهوت توابع شد

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं
जरां यौवनं हन्तांगेषु गुणाश्च वंध्य
फलतां याता गुणज्ञै विना ॥ किंयु
क्तं सहसा भ्युपैति बलवान् कालः
कृतांतोऽक्षमी ह्या ज्ञातं स्मर शासनां
घ्रियुगलं मुक्त्वास्ति नान्यागतिः ६१

ضعیفی در خیال ما اثر کرد
ضعیفی شد بر فقا قوت علم
قضا از جا بگی پیشم رسیده
کنون چیز پائی قاتل نفس ای جان

جوانی رفت چون پیری اثر کرد
ندیدم کس قدر دانای علم
شنا نیده نه من چیزے شنیده
نمی بینم رهائی خویش ای جان

तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं
स्वादु सुरभि क्षुधार्तः सन् शालीन्
कवलयति शाकादि वलितान् ॥

मदीये कामाग्नौ सुहृदतरसा श्लिष्य
ति वधूं प्रती कारो व्याधे: सुखमिति
विपर्यस्यति जन: ॥९२॥

پی تشنگی میخورد آب سرد
پی شهوت دهد رو پی وصل زن
نفهمد که زین یک دوا یکی است

پی گرسنه خورش غذا سرخ و زرد
ندانند که نیک است با عمر کن
وزین جسم فانی تجسس کسی است

स्नात्वा गाङ्गै: पयोभि: शुचि कुसुम
फलै र र्च यित्वा विभो त्वां ध्येये ध्या
न नियोज्य क्षिति धर कुहर ग्राव
पर्यंक मूले ॥ आत्मा राम: फलाशी
गुरु वचन रत स्त्वत्मा सादा स्मरा
रे दु:खान्मोक्ष्ये कदाहं तव चरण
रतो ध्यान मार्गैक प्रग्न: ९३

ز آب گنگ گیه ده غسل و صندل بدست آرم
نشینم اندر لب غارهی ز مرشد قول یاد آرم

پرستش شیو کنم دل را ز دل دریا شیو دارم
خورم بر رستم از دنیا بیابیت دل حیان دارم

शय्या शैल शिला गृहं गिरि गुहा
वल्कं तरूणां त्वच: सारंगा: सुहृ
दो ननु क्षिति रुहां वृत्ति: फलै:
कोमलै: ॥ येषां निर्झर मम्बु पा

ज्ञानं सतां मानमदादि नाशनं केषां
चिदेन स्मद मान कारणम् ॥ स्थानं
विविक्तं यमिनां विमुक्तये कामातु
राणामति काम कारणम् ॥८०॥

بیاقوت و شیرینفان از پی خاطر تواضع شد
به تنهائی نشستن بهر عقلا سر حق دیدن

همینک و ز ظریفان از پی تلخی تواضع شد
همینک شهوتی را از پی شهوت تواضع شد

जीर्णा एव मनोरथाः स्वहृदये यातं
जरां यौवनं हन्ताङ्गेषु गुणाश्च वंध्य
फलता याता गुणज्ञैर्विना ॥ किं यु
क्तं सहसाभ्युपैति बलवान् कालः
कृतान्तोऽक्षमी ह्या ज्ञातं स्मरशासनां
घ्रियुगलं मुक्त्वास्ति नान्या गतिः ८१

ضعیفی در خیال ما اثر کرد
ضعیفی شد بر نفقا و به علم
قفسا از چاشنی پیشم رسیده
کنون خبر پای قاتل نفس ای جان

جوانی رفت چون پیری اثر کرد
ندیدم کس قدر دانای علم
شنا نیده نه من چیزی شنیده
نمی بینم رهائی خویش ای جان

तृषा शुष्यत्यास्ये पिबति सलिलं
स्वादु सुरभि क्षुधार्तः सन् शालीन्
कवलयति शाकादि वलितान् ॥

यावत्स्वस्थमिदं कलेवर गृहं यावच्च
दूरे जरा यावच्चेन्द्रिय शक्तिर प्रति
हता यावत् क्षयो नायुषः ॥ आत्मश्रे
यसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो
महा न्सो हीसे भवनेच कूप खननं
प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥८८॥

تو داري تندرستي تا توئي اي نوجوان ترا عمرت نه كم گشته نه توگشتي ضعيف ن شدي محبوب پير و ضبق نفست را گرفت	تا تو در لعبي نه پيري تا توئي از نفس دان عاقل آنست كو نهد زحق زار نحيف نيست ممكن چاه كندن چون كه آتش گرفت

नाभ्यस्ता भुवि वादि वृन्द दमनी वि
द्या विनीतोचिता खड्गाग्रैः करिकु
म्भ पीठ दलनैर्नाकं न नीतं यशः ॥
कान्ता कोमल पल्लवा धर रसः
पीतो न चन्द्रो दये तारुण्यं गत
मेव निष्फल महो शून्यालये दी
पवत् ॥८९॥

ي دلداري علما خود مي كندن ز دل جهلا يران تيغ سر فيلان نبريدم نه ز دشمن سر نوشيدم لب زيبا ز حور نازنين گل بر	نخواندم علم كز وي نام باشد و هم مولا كه باشد هول از تيغ بر اسمان پر تر گذشته عمرها در خانه خالي چون شمع انور

प्राप्त कन्था सखि निर्मोनो निरहं कृ
ति: शम सुखा भोगे क वह स्पृहः ॥८६

گدائی سہر خور ماندن بانسان محض بے الفت
نداون نے گرفتن بودن و در خود بلا تکلف
رہیدن اے ز دنیا دل برب دادن دعا کردن
نہ بارہ لتہ چندن سہر پوشش جنیہ اشن گر دل
نماند نفس روشن دل شود از نور حق انور
ہمی باشد ویے لبس کم کہ بنید نور حق انور

मातर्मेदिनि तात मारुत सखे तेजः सु
बन्धो जल भ्रातर्व्योम निबद्ध एव भ
वता मेष प्रणामाञ्जलि: ॥ युष्मत्संग
वसीप जात सुकृतो ट्रेक स्फुर न्निर्म
ल ज्ञाना पास्त समस्त मोह महिमा
लीये परे ब्रह्मणि ॥८७॥

ایی با ویدرم بہ پنج عنصر مادر زمین و ست نور
اینک ہست سلام آخر زما کز ما کہ شد نیاب نور

از ہمسایہ آب ہم فلک را خوانم برادر و پور
بردم نور ز روح خود بتر با دیگر نہ سازم بہ فور

ऐ बाद ए पदरं ब पंज अनसर्मा दर्जमी दोस्त नूर अज़ हम्सा यह
आवहम् फलकरा ख्वादं विरादर वपूर ॥ ईनक हस्त सलाम आखि
रइ मा कज़ माकि शद नेक नूर वुर्दं नूर ज़िरुहं ख़ुद र वबा
दीगर न साज़म्द फ़ूर ५॥

जगदपि ॥ इदानीमस्माकं पटुतरवि
वेकाञ्जनजुषा समीभूता दृष्टिस्त्रिभु
वनमपि ब्रह्म तनुते ॥८५॥

قیام ما چو بد در ظلمت نفس ز نور حق چو در دل ما اثر کرد		جهان در شکل زن چه بهر ما نفس نماند تفس زن نے ظلمت نفس

रम्याश्चन्द्रमरीचयस्तृणवती रम्याव
नान्तस्थली ॥ रम्यः साधुसमागमः श
मसुखं काव्येषु रम्याः कथाः ॥ कोपो
पाहितबाष्पबिन्दुतरलं रम्यं प्रियाया
मुखं सर्वं रम्यमनित्यतामुपगते चित्ते
न किंचित्पुनः ॥८६॥

بباد لچسپ ما را فقیری بود با د لچسپ رفقا نمودم به تلخی که اوای ر و سے زیبا چو ثابت شد جهان فانی به نظرم		زمرد فرش در صحرا خوشنما بود حکایت عشق ما از بس شمردم بباخوش بود دامن از زر دنیا خدا را از خودی خود داد نظرم

भिक्षाशी जनमध्यसंगरहितः स्वा
यत्तचेष्टः सदा दानादानविरक्तमा
र्गनिरतः कश्चित्तपस्वी स्थितः ॥ र
थ्याक्षीणविशीर्णजीर्णवसनैः सं

چه حاصل کردن زین کارهایان همینک کارهای نور مولا	نسازی نور حق را گر تمایان چو بقا آمند دیرین اندادلا

आयु कल्लोल लोले काति पय दिवस
स्थायिनी योवन श्री रर्थाः संकल्प
कल्पा घन समय तडि द्विभ्रमा भोग
पूरा : ॥ कराठा श्लेषो प गूढं तदपि
चन चिरं यत्प्रियाभिः प्रणीतं ब्रह्म
एया सक्त चित्ता भवत भव भया म्भो
धि पारं नरीतुम्॥८२॥

چو موج بحر این عمرم روانست چو نسیم برشگال این وصل دولت ببایدبس که دل دررب بداری	جوانی برق سان ورتن نهانست وصال نازنین را نیست مهلت که به باشد برایدرین داری

ब्रह्माण्ड मण्डली मात्रं किं लोभा
य मन स्विन :॥ शफरी स्फुरिते नाब्धेः
क्षुब्धता जातु जायते ॥८३॥

به بیند نور حق کانرا چه حکمن و زغلانیدن	که موج بحر اماهی تو اندرشے طپانیدن

यदा सीद ज्ज्ञानं स्मरति निरसंस्कार
जनितं तदा दृष्टं नारी मय मिद मशेषं

پر از نازک بزیر سبز زمین بستر ب بهتر
به عیش و خوش با دلکش این باد و صحرا سنگ پاره نور
میسر نیست این آرام شاه دهر را اینجا

پی [خیمه؟] شد این آسمان دلکش خوشنما
بجای [تخت؟] زیبا فکنت یاور ب بهر فنا در طور
که دارد یار دنیا را اسیر چون با رهبر اینجا

त्रैलोक्याधिपतित्वमेवविरसंयस्मि
न्महाशासने तल्लब्ध्वासनवस्त्रमान
घटने भोगे रतिं मा कृथाः॥ भोगः को
ऽपि स एक एव परमो नित्योदितो जृ
म्भते यत्स्वादाद्विरसा भवन्ति विषया
स्त्रैलोक्यराज्यादयः॥९०॥

چو بینی نور حق باطل شود همه سلطنت دنیا
همین را راست دان نه وصل و الفت بجفد دل

بنیان و جهان خود بینی مهر تو ذلت دنیا
حشی کرجا نیتی ربا تو دانی ذلت دنیا

किं वेदैः स्मृतिभिः पुराणपठनैः शा
स्त्रैर्महाविस्तरैः स्वर्गग्रामकुटीनि
वासफलदैः कर्मक्रियाविभ्रमैः
मुक्त्वैकं भवबन्धदुःखरचनाविध्वं
सकालानलं स्वात्मानन्दपदप्रवेश
कलनं शेषा वणिग्वृत्तयः॥९१॥

چه از وید و چه از علم ریاضی
قصص متبرک و یا علم مجالس

چو از منطق چه شد از علم قاضی
نتیجه حاصل چه نشد یا هوس

कथमात्मनीनं तद्ब्रह्म न स्मरसि नि
र्वृतिमेषि येन ॥७७॥

زیور بر زمین با بر فلک هشتم نمی بر دی تکان بکیرم تو مل رحق میدانی	همه ابد الحیات و بر بحر و تیز بیت کم نیست لیل ایل که قدیمی باشی یا پی تو انور نور حق ایسے دل

रात्रिः सैव पुनः स एव दिवसो मत्वा
मुधा जन्तवो धावन्त्युद्यमिन स्तथै
व निभृतप्रारब्धतत्क्रियाः ॥ व्या
पारैः पुनरुक्त भुक्त विषये रेवं विधे
ना मुना संसारेण कदर्थिताः कथ
महो मोहान्न लज्जा महे ॥७८॥

همین لیل و نهار از صاحب عقلا نمیگذرد همان کار و همانان گفتنی زینها چه شان باشد	همان خواهش همان درد و روش یکسان نمیگردد همین نافهم انسان را اگر اشهرمش نمیگردد

मही रम्या शय्या विपुल मुपधानं
भुजलता ॥ वितानं चाकाशं व्यजन
मनुकूलोऽयमनिल ॥ स्फुरद्दीपश्च
न्द्रो विरति वनिता सङ्गमुदितः सुखं
शान्तः शेते मुनि रतनु भूति र्नृप इव
॥७९॥

زنعمت ها خوری گر تو و یا از جو تو قت شام — نه بینی نور حق در دل چه از شاه و یا پیاده

भक्ति भवे मरण जन्म भयं हृदिस्थं
स्नेहो न बन्धुषु न मन्मथजा विकारा।
संसर्ग दोष रहिता विजना वनान्ता-
वैराग्य मास्ति किमतः परमार्थनीयम् ॥७५

وهر دل گر به شیو باشد هویدا
محبت از محب نے نفس در دل
نشستن در بیابان زان لب به
دعا کردن ازین زاید پے چیست

نه وحشت مرگ نے فرحت زبیدا
رہائی از ہمه داری تو در دل
فقیری را همین باشد بیا به
که بهتر لطف هست این از پے زیست

तस्मादनन्त मजरं परमं विकासि
तद्ब्रह्म चिन्तय किमेभिरसद्विक
ल्पैः ॥ यस्यानुषङ्गिण इमे भुवना-
धिपत्य भोगादयः कृपण लोकम
ता भवन्ति॥७६॥

شمال نور ز نور حق بیاید در دولت ایجان
چه حاصل دادن دل در خرافات جهان فانی

بدانی مثل خرمهره تمامی سلطنت ایجان
ریاضت کن که یابی نور حق را در دولت ایجان

पातालमाविशसि यासि नभो वि
लङ्घ्य दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस
चापलेन ॥ भ्रान्त्यापि जातु विमलं

एकाकी निःस्पृहः शान्तः पाणिपा
त्रो दिगम्बरः ॥ कदा शम्भो भविष्या
मि कर्मनिर्मूलनक्षमः ॥७२॥

به تنهایی بلا خواهش و آزاد
چسان ای شنبو مرا آید میسر
ظروف از دست سهر پوشش سوا
که کنند من بیخ کارے دیر گیر

प्राप्ता श्रियः सकल कामदुघास्ततः
किं दत्तं पदं शिरसि विद्विषतां ततः
किम् ॥ सम्मानिताः प्रणयिनो विभ
वैस्ततः किं कल्पं स्थितं तनुभृतां त
नुभिस्ततः किम् ॥७३॥

چو زر یابی مراد آور چه حاصل میشود از وے
کسی گر برد پیش رفقا زر تا هم چه می شاید
مینی گر پا تو بر دشمن چه حاصل میشود از وے
بمانی زنده تا محشر چه میشود از وے

जीर्णा कंथा ततः किं सितममलप
टं पट्टसूत्रं ततः किं एका भार्या ततः
किं हयकरिसुगणै रावृतो वा ततः किं
भक्तं भुक्तं ततः किं कदशनमथवा वा
सरान्ते ततः किं व्यक्तज्योतिर्न वान्त
र्मथितभवभयं वैभवं वा ततः किम् ॥७४॥

تو پوشی جبه با سلطان و یا از پنبه ساده || ابداری زن و یا زنهار مثل فیل نر ساده

چه از پوست اشتر نماند عزیز
سگے کو ز مفلس تونگر بود
ازان به مبین روی دنیای دون

بہ شرق و بہ غرب بیابان ز بے تمیز
روان ابر و آتش مثل خنجر بود
فقیری بہ صحرا ز صبر و سکون

गङ्गा नरङ्ग कणशीकर शीतलानि
विद्या धरा ध्युषित चारु शिला त
लानि ॥ स्थानानि किं हिमवतः प्र
लयं गतानि यत्साच मान परपिण्ड
रता मनुष्या: ७०॥

ز موج گنگ در افشار آبش
نشستی جا بجا رضوان سبوحی
قیامت شد چه همرا با چنین جاه

چه هیچ باشد نماند تیز تابش
بیاد رب علیحده از قبوحی
بخواری میخوری یک لقمه در راه

यदा मेरुः श्रीमान्निप तती युगान्ताग्नि
निहतः समुद्राः शुष्यन्ति प्रचुरनिक
रग्राह निलयाः ॥ धरा गच्छत्यन्त -
धरणिधरपादैरपि धृता शरीरका
वार्ता कारि कलभ कर्णाग्र चपलं ॥७१

فتد روز قیامت کوه ز آتش شعله
فنا باشد زمین و کوه هیجانش فنا باشد

بسوزانند سنگان را و آبی صحرا رهوله
چه ذکر از جسم کو چون گوشت بچه فیل میباشد

کمان از گل تر آتش شعله نهان او | | شده چون سرو بیجا سکت این زن

रम्यं हर्म्यतलं न किं वसतये श्राव्यं
न गेयादिकं किंवा प्राण समा समा
गम सुखं नैवाधिकं प्रीतये ॥ किंतु
भ्रान्त पतत्पतङ्ग पवनव्यालोल दीपां
कुरच्छाया चंचलमाकलय्य सकलं
संतो वनांतंगताः ॥ ६६ ॥

خدا دوستان را چه قصر نبود | | زخنهان و قوال حسن نبود
دلارام جان زن و یا وصل او | | همه بود لیکن نه بدا صل او
بدانست این دیر را نفس آب | | که رفته به صحرا عبادت مآب
چه انسان که غارت کند جسم را | | چو کرمی به شمع کو دهد جسم را

किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगता
निर्झरा वा गिरिभ्यः प्रध्वस्ता वा त
रुभ्यः सरसफलभृतो वल्कलेभ्य
श्च शाखाः ॥ वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि प्र
सभमुपगत प्रश्रयाणां खलानां दुः
खोपात्ताल्प वित्तस्मय पवनवशान
र्तितभ्रूलतानि ॥ ६७ ॥

چه کند از زمین وردان آب کوه | | نماند چه چیر میوه شاخ ستوه

چه فرق افتاد اکنون اسپی عزیزم | شدی تو در خودی صاحب تمیزم

बाले लीला मुकुलित ममी मन्थरा-
दृष्टि पाताः किं क्षिप्यन्ते विरम वि
रम व्यर्थ एष श्रमस्ते॥ संप्रत्यन्ये व
यमुपरतं बाल्यमास्था वनान्ते क्षीणो
मोहस्तृण मिव जगज्जाल मालोकया
मः॥६६॥

چرا سر سیدهی ابرو کمان تیر نظر بر من
نمانده وقت بازی شد مرا الفرت ز دنیا و دولت

که من پوشیده ام جلقه فقیری خود حق و رتن
همین فهمم بخ خس این ویر را هم حرکت اکنون

ایضاً دیگر

چرا از مند و اکردن ز چشمانت سنان باری
برفته وقت طفلی ای کنون خواهش بصحرا است

که ناز و بازی و در دلش جا باید بخواری
قطع کردم محبت هم خس فی نیا و دلداری

इयं बाला मां प्रत्यनवरत मिन्दीवर
दल प्रभाचोरं चक्षुः क्षिपति किम
भिप्रेत मनया॥ गतो मोहोऽस्माकं
स्मर कुसुम बाण व्यतिकरज्वलज्ज्वा
लाशान्ता तदपि न वराकी विरमति॥
॥६७॥

به بینت ای چشم نیلوفر چرا با ما شب و روز باسپی | نمی فهمی که کردم ترک اکنون من نیم یاری

بکن ترک از زبان کشی ای عزیز
نگفتن بجز راستی نیک دان
شنیدن فحص از زبان نیست به
هم بر همه ترک و سمر ص هوا
جواب بیے همین بهتر است داده ام

تنظلم پی زر نه صاحب تمیز
و خیرات تا حد هم نیک دان
به بندی لب و گوش آن نیست به
تو یکسان بدان قول پیشین روا
گدا بے ز خاصان حق خوانده ام

मात लक्ष्मि भजस्व कंचिद परं मत्कां
क्षिणीमास्मभूर्भोगेभ्यः स्पृहयाल
वोनहिं वयंकानिः स्पृहाणामसि ॥
सद्यः पूतपलाशपत्रपुटिकापात्रेप
विचीकृते भिक्षासक्तुभिरेव संप्राति
वयं वृत्तीं समीहामहे ॥६४॥

تو ای مادرم لکشمی رو کنون
کسی دیگر برا تلاشی بکن
که بیند ترا از نگاهے حقیر
نصیبے برم بر لاسے بر سیے

اگر قابل نه ام پور رهیت را کنون
محبت ز خواهان عقبی بکن
خدا دوستی کو که باشد فقیر
مسوتی که آرم گدائی سر سیے

यूयं वयं वयं यूयं मित्यासीन्मतिरा
वयोः ॥ किंजातमधुना मित्र येन
यूयंवयंवयम् ॥६५॥

میان من و تو فرق نبی بود
برابر بود بس فرق نی بود

سینان زنان در پس مغرق سلسله سیاره
گنهگار رو چو ز دست نازکش زن زن کند یارا
مکن غارت تو خود را اگر بیابی انقدر حشمت
وگرنه دل برب درده که به باشد بی جهت

विरमत बुधा योषित्संगात्सुखात् क्ष
णभंगुरात्कुरुत करुणामैत्रीप्रज्ञा व
धूजन संगमम् ॥ नरवलु नरकेहारा क्रांत
घन स्तन मण्डलं शरण मथवा श्रो
णी बिम्बं रणन्मणि मेखलम् ॥ ६२॥

ز مرد عاقل ز صحبت زن که یک لحظه خوش باشد
بباید صحبت خاصان که در جنت به خوش باشد
کنتی چون رنج در دوزخ نباشد مهر بانت زن
نه روی زن نه پستان زن نه زیور زن نه جسم زن

प्राणा घाता न्निवृत्तिः पर धन हरणे
संयमः सत्य वाक्यं काले शक्त्या प्र
दानं युवति जन कथा मूक भाव परे
षाम् ॥ तृष्णा स्रोतो विभङ्गो गुरुषु
च विनयः सर्व भूतानु कम्पा सामा
न्यः सर्व शास्त्रे ष्वनुप हत विधिः श्रे
यसा मेष पन्थाः ॥ ६३॥

मोहं मार्जयता मुपार्जय रतिं चंद्रार्धे
चूडा मणौ चेतः स्वर्ग तरंगिणी तटभु
वा मा सङ्ग मङ्गी कुरु ॥ को वा वीचिषु
बुद्बुदेषु च तडिल्लेखा सुच स्त्रीषुच
ज्वालाग्रेषुच पन्नगेषुच सरिद्वेगेषु
च प्रत्ययः ॥६०॥

مکن الفت بہ ترک ایدل بہاے شبو بار اسپے جان
کہ دارد در سر خود ماہ اول رانشان اسے جان
کنار گنگ زیر اشجار پاک آرام کن کاینجا
نباشد زن کہ از زن مغفرت مشکل شود آنجا
کہ زن چون آتش شعلہ و یا چون جوش بحر است این
و دل چون برق یا سیماب بے تہر و قرار است این

अग्रे गीतं सरस कवयः पार्श्वतोदा
क्षिणात्याः पृष्ठे लीला वलय रणि
तं चामर ग्राहिणीनाम् ॥ यद्यस्त्ये
वं कुरु भवरसास्वादने लंपटत्वं ।
नो चेच्चेतः प्रविश सहसा निर्विक
ल्पे समाधौ ॥६२॥

چو کم عقلان شہان یابی تو عیش و عشرت آرام
کہ قوالان بپیشت راست و چپ شعرا جنوب آسا

زمین و آسمان شفاف گرد قید دنیا را	برار و از دل خود هیبت و شهوت و خنیا را

एतस्मा द्विरमेन्द्रियार्थ गहना दाया
सकादा श्रया च्छ्रेयो मार्ग मशेष
दुःख शमन व्यापार दक्षं क्षणात् ॥
शान्तं भाव मुपेहि संत्यज निजां क
ल्लोल लोलां गतिं मा भूयो भज भंगु
रां भवरतिं चेतः प्रसीदाधुना ॥५८॥

مبادا سنجیده ام ای دل تو ترک این نفس را اکنون کنون کن کو کند هیچ این و آرامی براه راست	ز شهوت نفس بر دم عمر آخر نیست تا اکنون جهان چون برق دل را گو بیارا آید بجود اکنون

पुण्यै र्मूल फलैः प्रिये प्रणयिनी प्री
तिं कुरुष्वाधुना भू शय्या नव पल्ल
वैर कृपणै रुत्तिष्ठ यामो वनम् ॥क्षु
द्राणाम विवेक मूढ मनसा यत्रेश्व
राणां सदा चित्त व्याध्य विवेक वि
ह्वल गिरां नामापि न श्रूयते ॥५९॥

تو هم برخیز اینک میرویم صحرا تو ای دل ما بکن صحرا نشینی اکل از میوه تر و تازه که آنجا ز اهل دنیا کار و سنگ دنیا نمی باشد	همینک دست لبته عرض ما از عقل ما و دل ما زمین بستر خوش اسد هر پوشش پوست تازه همین باشد رها صفت کس دنیا کس نمی باشد

بدرها نیک اشخاصان که آتش موهوم میگرده
رو و هر روز تا هم نیست کلفت در دل ایشان
نه آن بهتر که بر گردن شکم از دو دو نان برده

चाण्डालः किमयं द्विजाति रथवा शू
द्रोऽथ किं तापसः किं वा तत्त्व निवे
शपेशल मति योगीश्वरः कोऽपि
किम् ॥ इत्युत्पन्न विकल्प जल्प मु
खरैः सम्भाष्य माणा जनै र्न क्रु
द्धाः पथि नैव तुष्ट मनसो यान्ति स्व
यं योगिनः ॥५६॥

اگر گویند شهر دگرها که سگ گوید حقیر این ست
شنید در راه دل در رب به گفتن شان نه دارد دل

برهمن یا پری یا فهمی عالم و زاهد حقیر است
ضمیر نرنجد نه آزاد رود یکسان فقیر است

सर्वे धन्याः केचित् त्रुटित भव
बन्ध व्यति करा वनान्ते चित्तान्तर्वि
षम विषयाशी विषगताः ॥ शर
च्चन्द्रज्योत्स्ना धवल गगना भोग सु
भगां नयन्ते ये रात्रिं सुकृत चय चि
त्तैक शरणाः ॥५७॥

بدان حبّا بنصیبان را که در شب ها گذرانند

ز یا ضدت کشتی کنند خور انشسته [illegible]

ازین باید بست بهتر سبکبار ای حقداری	که علما زاهد و فاضل حقداری

भोगा मेघ वितान मध्य विलसत्सौदा
मिनी चञ्चला आयु र्वायु विघट्टिता
भ्र पटली लीनाम्बु वद्भंगुरम् ॥ ली
लायौवन लालना तनुभृता मित्या
कलय्य द्रुतं योगे धैर्य समाधि सि
द्धि सुलभे बुद्धिं विधद्ध्वं बुधाः ॥५४॥

در ابر برق سان انسان را این وصل دولت هست
چو صرصر می برد او را چنان دم زندگی این هست
نمی ماند جوانی نیز حسن و نیز شهور زور
بباید کرد خدمت رب که اینک راست دولت هست

पुण्ये ग्रामे वने वा महति सित पट
च्छन्न पालीं कपाली मादाय न्या
य गर्भ द्विज मुख हुत भुग्धूम धूम्रो
प कण्ठम् ॥ द्वारं द्वारं प्रवृत्तो वर मु
दर दरी पूरणाय क्षुधार्तो मानी प्रा
णी सधन्या न पुनरनु दिनं तुल्य कु
ल्येषु दीनः ॥५५॥

به شهر و جنگل و کاسه گدائی را بکف برده

گدائی نیک شد از وی پدیدار | که بگذارد چنان در نیک کردار

पाणिपात्रं पवित्रं भ्रमण परिगतं
भैक्ष्यमक्षय्यमन्नं विस्तीर्णं वस्त्र
माशा सुदशकममलं तल्प मस्वल्प
मुर्वी ॥ येषां निःसंगताङ्गीकरण प
रिणतिः स्वात्म संतोषिणस्ते धन्याः
संन्यस्तदैन्य व्यतिकरनिकराः कर्म
निर्मूलयन्ति ॥५२॥

کند کو پاک دست خویش را ظرف | گدائی جز ندارد دیگری حرف
جهات از بهر پوششش بر زمین رام | کند گوشه نشینی با خدا کام
نه خواهش ماند باقی نے ز دنیا | همه در دور زکار زکار دنیا

दुराराध्यः स्वामी तुरग चल चित्ताः
क्षितिभुजो वयं तु स्थूलेच्छा मह
ति च पदे बद्ध मनसः ॥ जरा देहं मृ
त्यु हरति सकलं जीवित मिदं सखे
नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र त
पसः ॥५३॥

بسا مشکل بود خدمت شاهان گذر کردن | دل شان مثل سیماب است بس مشکل بسر بردن
زمایان عقل فربسته دل و رحق کجا باشد | که خوف مرگ پیش آید چراغ جسم بیباشد

شنو ترک همه محظوظ دل در حق تصور ما
تصور همه را دها کرشن در جنگل چو نبدرا بن

که بگذارم شب ها به تنهائی کنار ما
نه یاد آید ز دنیا دون نشینم از دلم آسن

वयमिव परितुष्टा वल्कलैस्त्वं च
लक्ष्म्या सम इह परि तोषो निर्विशे
षो व शेष:॥ स तु भवति दरिद्रो य
स्य तृष्णा विशाला मन सिच परि
तुष्टे कोर्थवान् को दरिद्र:॥५०॥

ترا از زر مرا از پوست اشجار
بباید صبر رفته حرص بیرون
به معابر نیاک و زر زیور برابر

چو شد همه نامزه بار شش چار
حریص آنست گو دارد دل دون
چه از پنبه چه از ریشم برابر

यदेतत्स्वाच्छन्द्यं विहरणमकार्पण्य
मशनं सहार्यै: संवास: श्रुतमुपशमै
कव्रत फलम्॥ मनो मन्दस्पन्दं
बहिरपि चिरस्यापि विमृशन्नजा
ने कस्यैषा परिणति रुदारस्य त
पस:॥५१॥

روش آزاد اکل از بی سوالی
چنان گفتن شنودن مثل سالک
اگر باشد هوا و حرص پیدا

به سایه عاطفت بودن حوالی
که باشد از وجه مهر بالک
خرامد دل کند در حق شیدا

بلندی با بدان روزی کز و امید دارد کس
نشود دست نگر از صاحب زر باز ماند پس
نماید روز کم کان آنکه شهوت گم شد از جسمش
همی ترسد که شب آمد چنان سازم من از جسمش
نه بینم از تبسم هر دو را بر سنگ بنشینم
کجا باشد فقیری یا در نصیبم شاد بنشینم

विद्या नाधिगता कलंक रहिता वित्तंच
नो पर्जितं शुश्रूषापि समाहितेन म
नसा पित्रोर्न सम्पादिता आलोलाय
त लोचना युवतय: स्वप्नेपि नालिंगि
ता: कालोयं पर पिण्डलोलुपतया
काकैरिव प्रेरित:॥४८॥

نه گشتم عالم و فاضل نه صد بار زر گنجینه
نه بردم خواب هم از وصل محبوبان آهو چشم

نه کردم خدمت ابوین آدل شاد کینه
به لقمه غیر مثل زاغ بردم عمر بیهوده دنیا

विलीर्णे सर्वस्वे तरुण करुणा पूर्ण
हृदया: स्मरन्त: संसारे विगुण परि
णामा वधि गती:॥ वयं पुण्या रण्ये
परिणत शरच्चन्द्र किरणै स्त्रिया
मां नेष्यामो हर चरण चिंतेक श
रणा:॥४९॥

رود کو پاک از دیے جز خدا دوست	فقیری را کہ باشد دشمن و دوست

आसंसारं त्रिभुवन मिदं चिन्वतां ता
त नादृङ्वास्माकं नयन पदवीं श्रो
त्र वर्त्मागतो वा ॥ योऽयं धत्ते विष
य कारिणी गाढ गूढा भि मानः क्षीब
स्यान्तः करण करिणः संयमालान-
लीलां ॥४६॥

ز آغاز جہان تا حال اینجان گر شد پیدا از زن چون مخنفہ کام اسیرے کو ز زلف عنبرین شد	نمی بینم نمی شنوم ز دیہان بیارد خویش را بر نیک انجام کہ تا تاب رہائی گردنے شد

साम्प्रतं निर्वेदताया: स्वरूपमाह
ये वर्द्धन्ते धन पति पुरः प्रार्थना दुः
ख भाजो ये चाल्पत्वं दधति विषया
क्षेप पर्यस्त बुद्धेः ॥ तेषा मन्तः स्फु
रित हसितं वासराणां स्मरेयं ध्या
न च्छेदे शिखरि कुहर ग्राव शय्या-
निषण्णः ॥४७॥

शिवः शार्वं स्वर्गात् पशुपति शिरस्तः
क्षिति धरं महीध्राद् उत्तुंगा दवनि मव
नेश्चापि जलधिम् ॥ अधो गंगा सेयं
पद मुप गता स्तोक मथवा विवेक
भ्रष्टानां भवति विनि पातः शतमु
खः ॥४४॥

ز جنبت سر شنار ہم فتد از سر شیو بر زمین بہ بین این گنگا را کہ بدر ضلوائی سیں کجا		ز کوہستان رفتہ ز دل و دریا شد در زمین بدہ گم گشتہ تنہا شود نزل الثقیان ببین

जिजन्नत्सि शर्वे फितद् अर्जासि शिव्वर ज़मी॥ जि कोहिस्तां रसे जि दिल
दरया शुद दर ज़मी, बिबी नी गंगा रा कि बुदौ रजवानी पस कुजा वर हंगुगश्ता
हा शवद नुज़ले शांव सहमी ॥ ३ ॥

आशा नाम नदी मनो रथ जला तृष्णा
तरंगा कुला राग ग्राह वती वितर्क
विहगा धैर्य द्रुम ध्वंसिनी ॥ मोहा
वर्त सु दुस्तरा ऽति गहना प्रोत्तुङ्ग चि
न्ता तटी तस्याः पार गता विशुद्ध म
नसो नन्दन्ति योगी श्वराः ॥४५॥

ز خواہش سیل خیال اندر دریا کہ نہنگان زمان از جہالت محبت بجز رفتن بر وسے دشوار		چہ خوش گرداب پر شد اندر اینجا کہ پے کندن ز شجر استقامت لمعش از فکر بیرون فکر دشوار

سر آنکه من لب گنگا بتنگ کوه هم بنشینم
خمار آید حقیقی آن کجا باشد نصیب ما

نشین نیلوفری شب هم نصو لاشرک یکم بید چه نهانم
که سود بد شاخ آهو دمیتی از جسم من بنشینم

स्फुरस्फारज्योत्स्नाधवलितनतले क्वा
पि पुलिने सुखासीनाः शान्तिध्वनि
षु रजनीषु द्युसरितः ॥ भवाभोगोद्वि
ग्नाः शिव शिव शिवेत्यार्तवचसा क
दा स्यामानन्दोद्गतबहुलबाष्पप्लुत
दृशः ॥४२॥

خوشا قیصر خوشا ماه و خوشا جا
نه آواز سے کیسی و شب بدل سوز

لب گنگا تفکر ترک تنها
به شیو شیو شیو گم چشمان دل دوز

مصور سهر نخستا لیتش ز خوف از کار دنیا ها
روان آب از دیده کس نشینم مخوزینیا ها

महादेवो देवः सरिदपिच सैषा सुर
सरि द्गुहा एवागारं वसनमपि ता ए
व हरितः ॥ सुहृद्वा कालोऽयं व्रतमि
दमदैन्यव्रतमिदं कियद्वा वक्ष्या
मो वटविटप एवास्तु दयिता ॥४३॥

خدا یک شیو ز گنگا سیل عمار انیست خانه ما
بگوییم تا کجا این بر شجر باشد دلا را غم

پی پرسش جهات از دوست یک ترک سوال ها
که حق باشد ز ما خدمت ز ما بهر خدای ما

بیک خانه که یک کس بود آباد
ز دل شادان نمی بینم کسی را
قضا را آن همه لقمهٔ اجل شد
اجل را باز سی ایشان خوش آمد

نه یک خانه بل بودند دل شاد
ز یک آبادیش خانه ها را
چو چوسر باز دور آخر خجل شد
تعجب گو نفهمد زین خوش آمد

तपस्यन्तः सन्तः किमधिनिवसामः
सुरनदीं गुणोदारान्दारानुत परि
चरामः सविनयम् ॥ पिबामः शास्त्रौ
घानुत विविधकाव्यामृतरसान्न
विद्मः किं कुर्मः कतिपयनिमेषायुषि
जने ॥४०॥

کنم آتش پرستی بر لب گنگ
بنوشم علم از صحبت هنردان
همین عمرم که روز پنج باقی ست

و یا وصل حسینان دلان سنگ
و یا از شاعران بی نقط خوان
چرا فهمم که ما را کردنی چیست

गंगातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मा
सनस्य ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना
योगनिद्रां गतस्य किं तैर्भाव्यं मम
सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशंकाः संप्रा
प्स्यन्ते जरठहरिणाः शृंगकण्डूविनो
दं ॥४१॥

بسا فرزند نیک اختر هنرمند
گروهی عاملان بر دادن پند

رقوالان رقاصان هنرخوان
چنان زهینده تر چون شاه رضوان

به بین اکنون نشان شان نمانده
تکن تسلیم بهر آنکه رانده

पुन: कामस्तुह्रिश्पाह॥
वयं येभ्यो जाता श्चिर परि गता एव
खलु ते समं यै : संवृद्धा : स्मृति वि
षयायितां तेऽपि गमिता : ॥ इदानीमे
तेस्म : प्रति दिवस मासन्न पतना ग
तास्तुल्या वस्थां सिक तिल नदी तीर
तरुभि : ॥३५॥

کسی کو همدم پیدا شده بود
صفیر مرگ اورا زود بربود

ببازی طفلها با ما ببازی
قضا با او بکرده ترک تازی

کنون سر ما ز پیری پیچ نماشد
چو دریا شجرے را لب سر باشد

यत्रानेकःश्चिदपि गृहे तत्रानिष्ठ
त्यथैकोयत्राप्येकस्तदनु बहव
स्तत्र चान्तेन चैक: इत्थं चेमौ रजनि
दिवसौदोलयन्द्वाविवाक्षौ का
ल: काल्या सह बहुकल: क्रीडति प्रा
णसारि:॥३६॥

بعلم از بحثش نکته چنین هنر را
چو دیدم خوف یک را از یکی هست

ز مرگ این جسم فانی شند ترین را
وسیله بی خوف در دنیا فقیرست

अमीषां प्राणानां तुलित बिसिनी प
त्र पयसां कृते किन्नास्माभिर्विगलि
त विवेकैर्व्यवसितम् ॥ यदाढ्याना
मग्रे द्रविण मदनिःशंक मनसां क
ते वीत व्रीडैर्निज गुण कथापात क
मपि ॥३६॥

ببر شیلو فری چون قطره آب
بگیر دیدم بسا بر خواهشش دل
حیا را پیش کسش عرض نمودم

روان مانند بران لولوی شان تا ب
وظایف ور دکردم ترک از دل
نفهمیدم کجا بودم که بودم

भ्रान्तः कष्टमहो महान्स नृपतिःसा
मन्त चक्रं च तत्पार्श्वे तस्य च सापि
राज परिषत्ताश्चन्द्र बिम्बाननाः ॥
उद्रिक्तः स च राजपुत्र निवहस्ते व
न्दिनस्ताः कथाः सर्वं यस्य वशाद
गात्स्मृति पदं कालाय तस्मै नमः ३७

چه سان عادل در نیجا بود شاهی
بسا در باریان نیک فرجام

شهر آباد خوش خنیان نگاهی
حسینان جهان مجلس سر انجام

برادر زن و پور همسایگان
خویش انکس رود در بیابان و کوه

جدائی نمارفته از تن نهان
گذارد بدامان گنگا ستوه

परेषां चेतांसि प्रति दिवस माराध्य
बहुधा प्रसादं किं नेतुं विशसि हृद
य क्लेश कलितम्॥ प्रसन्ने त्वय्य
न्तः स्वय मुदित चिन्ता मणि गुणे-
विमुक्तः संकल्पः किमभिलषितं
पुष्यति न ते॥३५॥

چرا دلداری اغیار را دادی بدل بیل

سخن یکسو حق را ببین کی دل بدحق اتی در دل

अथ भोगयद्दति॥
भोगे रोग भयं कुले च्युति भयं वि
त्ते नृपाला द्भयं मौने दैन्य भयं ब
ले रिपु भयं रूपे जराया भयम्॥
शास्त्रे वाद भयं गुणे खल भयं का
ये कृतान्ता द्भयं सर्वं वस्तु भयान्वि
तं भुवि नृणां वैराग्य मेवा भयं॥३६

به عیش و وصل خوف از مرض پیدا
بزر از شاه خاموشی ز جاهل
ز پیری حسن را رنج چنان شد

به صاحب نسل بد اصیلی هویدا
بپهلوانان ز دشمن رنج حائل
چو لرزان بید خوش جسمی نشان شد

غرورم چون بخار از جسم رفته لکبکه بیت آمد

निर्ममतास्वरूपमाह
स्फाति क्रान्तः कालो लटभ ललना भो
ग सुभगो भ्रमन्तः श्रान्ताः स्मः सुचि
र मिह संसार सरणौ ॥ इदानीं स्वः
सिन्धोस्तट भुवि समाक्रन्दन गिरः सु
तारैः फूत्कारैः शिव शिव शिवेति प्रत
नुमः ॥३२॥

به عیش و وصل محبوبان جوانی خوش زما رفته
روان در دیر فانی عمر ما آخر بپا گشته
کنون خواهش به بدگفتن زنان را بر کنار گنگ
همین کافی ست وردما زبان شیو شیو شیو بسته

माने म्लायिनि खण्डिते च वसुनि
व्यर्थे प्रयाते र्थिनि क्षीणे बन्धुजने
गते परिजने नष्टे शनैः यौवने ॥ युक्तं
केवल मेतदेव सुधियां यज्जह्नुक
न्या पयः पूत ग्राव गिरीन्द्र कन्दर दरी
कुञ्जे निवासः क्वचित् ॥३३॥

تفر و زر و رفت شد بی نصیب	گدایان سپی یوزه رفته غریب

अर्थानामी शिषेत्वं वयमपिच गिरा
मी श्म हे यावदित्थं भूरत्वं वादिद-
र्प्पे ज्वर श्रमन विधा वक्षयं पाटवं नः
सेवन्ते त्वां धनाढ्या मति मल हतये
मामपि श्रोतु कामा मय्यप्या स्थान
चेत त्वायिमम सुतरामेष राज नानं।
स्मि ॥३०॥

توئی مالک ملک گنج و گهر
توئی مشت زن بر سر دشمنان
ترا از طمع نیک فاجر مرید
به بین گر ترا نیست رغبت زما

منم مالک ملک علم و هنر
کنم حل معماء علما جهان
بما علم خواهان هزاران مرید
همی میروم دور تر از شما

यदा किंचित्ज्ञोऽहं द्विप इव मदा
न्धः समभवं तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभ
वदवलिप्तं मम मनः॥ यदा किंचि
त् किंचिद् बुधजन सकाशादव
गतं तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो
मे व्यपगतः॥३१॥

زکم علمی تکبر در سرم چون فیل مست آمد
بفهمیدم که مثلم در جهان نیست هست آمد
چو آمد هوش رفته در سرم از صحبت علما

पुरा विद्वत्तासी दुप समवतां क्लेश हत
ये गता कालेनासौ विषय सुख सिद्धये
विषायिणाम् ॥ इदानीं तु प्रेक्ष्य क्षि
ति तल भुजः शास्त्र विमुखा नहो क
ष्टं सापि प्रति दिन मधोधः प्रविश
ति॥२८॥

به اول این هنر بهر ضیا بود چو بی علمی به شاهان روبرو شد		وزان پس از پی شاهان خوشا بود هنر را و رتبهٔ اوی فزون شد

साहंकारं पुरुषमुद्दिश्याह
सजातः कोप्यासीन्मदन रिपुणा मू
र्ध्नि धवलं कपालं यस्योच्चैर्विनिहि
तमलंकार विधये ॥ नृभिः प्राण
त्राण प्रवण मतिभिः कैश्चिद धुना-
नमद्भिः कः पुंसा मय मतुल दर्प ज्व
रभरः॥२९॥

گذشتند آنچنان زهاد که اسما پاک می گفتند
که از سر پاک شان قدسی رب تسبیح می سفتند
کنون زاهد نماکا هرا که چند اشخاص را جمع شد
تکبر بر سر شان از زمین بالا همی رفتند

بروبین تا زحمقا خویش را چه همی گفتند

मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः स
र्वोऽप्ययं नत्वणु स्वांशी कृत्य स एव
सं युग शते राज्ञां गणै र्भुज्यते तद्द
द्य र्ददतेऽथवा न किमपि क्षुद्रा द
रिद्रा भृशं धिक् धिक् धिक् तान्पुरु
षा धमान्धनकणं वाञ्छन्ति तेभ्यो
ऽपिये ॥२६॥

زمین یک گردگان گل زحق بر آب شد پیدا
زبس بر مختصر بر وی دل شاهان شده شیدا
چو شد تقسیم بس یکحصه را بگفتند
بدان لعنت بر آن کانرا کاین خواهش شود پیدا

दुर्भगसेवकस्य वाक्यमाह
न नटा न विटा न गायना न परद्रो
ह निबद्ध बुद्धयः ॥ नृप सद्मनि ना
म केवयं कुच भारा नमिता न यो
षितः ॥२७॥

نه ام داربازو نه زاینی منم
نه ام زن خوشا سینه و خوبرو
نه جاهل نه خنیان نه را وی منم
که پیسد مراد ر شهان روبرو

निःस्पृहाणामधिकारमाह
त्वं राजा वयमप्युपासितगुरुप्रज्ञा
भिमानोन्नताः ख्यातस्त्वं विभवैर्य-
शांसि कवयो दिक्षु प्रतन्वति नः इ
त्थं मानद नातिदूरमुभयो रप्यावं
योरन्तरं यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽ
सि वयमप्येकान्ततो निःस्पृहाः २४

تو ئی راجا و من بر خدمت مرشد همی نازم
ترا جاه و حشم ما را خزینه علم میبازم
برین هم گر ترا از من تنفر می شود پیدا
مرا هم گوشهٔ تنهاییست کافی دل نمی بازم

अभुक्तायां यस्यां क्षणमपि न या
तं नृपशतै र्भुवस्तस्या लाभे कइ
व बहुमानः क्षितिभुजाम् ॥ तदं
शस्याप्यंशे तदवयवलेशेऽपि प
तयो विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः
प्रत्युत मुदम् ॥ २५॥

هزاران راجگان این دیر را فهمیده خود رفتند
کرا حاصل شود اکنون بر وجه نازی سفتند
چو شد او پاره پاره پاره او حاصل شود تا چه

मीच ॥ नव धनमधु पान भान्त सर्वे
न्द्रियाणा माविनय मनु मन्तुं नोत्सहे
दुर्जनानाम् ॥ २२॥

خوشش برطعمهای ذایقه دار آیم
نوز رشد در سر گشته هر عضو در در

خسپ زمین بیشتی پوست سنجاب پوشین
که شند از دهان تلخ گفتار ایشان

खुशवरतुमहायाज़ायक़ादारआव खुसपज़मिनपुश्ते पोस्तम्म
रञ्जार पोशीं नवज़रनशदसगंश्तहरउज्व ददर किशनद
ऽपज़दहना तल्ख गुफ्तार ऐशां ॥

मानिनामुद्दिश्याह
विपुल हृदये धन्यैः कैश्चिज्जगज्ज
नितं पुरा विधृत मपरै र्दत्तं चान्यै
र्विजित्य तृणं यथा ॥ इह हि भुव
ना न्यन्ये धीरा श्चतुर्दश भुञ्जते-
कति पय पुर स्वाम्ये पुंसां क एष
मदज्वरः ॥२३॥

شده انسان کسی کو کرد بنیاد
که شد پیدا برو این دیر فانی
کسی کو در ریاضت دل چنان داد
کسی کو پرورش کون و مکان کرد
ببین آنرا که دارد حصه ارضی

زمین و آسمان را جایه بنهاد
که بعضی کرده خود را برو بی قایی
گذشته زین سجق پیوسته دل داد
هوا و حرص را فهمید چون گرد
تکبر می‌نمی فهمد ز فرضی

वित्युपमितौ मुखं श्लेष्मागारं तदपि
च शशांकेन तुलितम्॥ स्रवन्मूत्र
क्लिन्नं करवर कर स्पर्शि जघन म
हो निन्द्यं रूपं कविजन विशेषै गुरु
कृतम्॥२०॥

دو پستان سفته طمی را مثال کوزه زر گفتند
چگان ابمنی از ران مثال بینی فیلان

سنجانه تف دهن تشبیه از مهپاره سفتند
چنان بی‌لطف جسمی را ز شعرا مثل و سفتند

अजानन् माहात्म्यं पततु शलभो
दीप दहने समीनो ऽप्य ज्ञाना द्बडि
शयुत मश्नातु पिशितम्॥ विजान
न्तोऽप्येते वय मिह विपज्जालजटि
लान्न मुञ्चामः कामान हह गह
नो मोह महिमा॥२१॥

به بین کرمی که در شمع جا نگذارد
از نهالیکه از جا نیاری خویش
ز نیک و بد که انسان واقف حال

و ماهی بهر لقمه جان ببازد
نمیدانند را ز خفیه را بیش
نه سازد ترک گر افسوس بر حال

दुर्जनमुद्दिश्याह॥
विसमलमशनाय स्वादु पानाय तो
यं शयन मवनि पृष्ठे वल्कले वास

कृत ग्राने र हत ननुः ॥ क्षुधा क्षामो
जीर्णः पिठरज कपाला र्पित गलः
शुनी मन्वेति श्वा हत मपि च हन्त्ये
व मदनः ॥१८॥

ضعیف و واحد العین و پالنگ
زبس ریمی زکرمی گرسنه نیز
به این حالت رود دنبال ماده

بریده گوش و دم زخمی و بی ننگ
گلوئے خم شکسته طوق شد نیز
کند کشته را کشته نفس زاده

विषयाणामधिकारमाह
भिक्षाशनं तदपि नीर संमेक वारं
शय्या च भूः परिजनो निज देह मा
त्रम् ॥ वस्त्रं च जीर्ण शत खण्डम
लीन कन्था हा हा तथापि विषया
न परित्यजन्ति ॥१९॥

گدائی کرده اکل در شب و روز
زمین و بستر آرام هر دو
زلته پاره پاره لته بسته
وسیلے در خوبرویان خویے بسته

کثیف و بے مزہ چون خوردہ بے سوز
نہ فہمیدہ ہمہ را در تن او
ضعیف بار و نقش نشستہ گشتہ
باید گریز این نفس گرہ بستہ

रूपतिरस्कारमाह
स्तनौ मांस ग्रन्थी कनक कलशा

ति नजनो यत्स्वयममून् ॥ व्रजन्त :
स्वा तन्त्र्या दतुल परता पाय मनस :
स्वयं त्यक्ता ह्येते शम सुख मन न्तं -
विदधति ॥१६॥

رود یک روز این لذات فانی	چه گذرانی به عیش جاودانی
ازان بهتر که سازی ترک لذات	که او خود ترک میسازند به ذات
چو آید وقت آخر پیش از مرگ	دهد رنج و تعب از حد در مرگ
وگر از خود تو تارک نفس باشی	مسرت یابی و در روضه باشی

तृष्णाधिकारमाह
विवेक व्या कोशे विद धति शमे शा
म्यति तृषा परिष्वङ्गे तुङ्गे प्रसरति
तरां सा परिणति : ॥ जरा जीर्णैश्व
र्य ग्रसन गहना क्षेप कृपण स्तृषा पा
त्रं यस्यां भवति मरुता मप्यधिपति७

شود هرگه که روشن روشنی نور	رود در دم طمع مانند کافور
اگر دل در ره هر در عیش نسوان	نه ممکن ترک او از شاه رضوان

मदनविडंबनमाह
कृश: काण: खञ्ज: श्रवण रहित: पु
च्छ विकलो व्रणी पूति क्लिन्न: कृमि

भिक्षैस्ते: फलैर्वृत्तिनम् ॥१३॥

نکردم ترک من آرام خانه
زخوف باد و آتش و یخ نکردم
نماند روز و شب در زر خیالم
چه کردم آنچه ناکردن زنا بود

گزو یابم امید جاودانه
فقیری را پئے حق رہ نبردم
خیال حق شده از حد محالم
خیالِ عابدان برعکس ما بود

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरंकि
तं शिर:॥ गात्राणि शिथिलायन्ते
तृष्णैका तरुणायते१४॥

زنقشا نقش پیری رو نمایان
خمیده جسم از پیری بباید

سپیدی مثل یخ سر را کشایان
جوانی حرص را اکنون فزاید

येनैवाम्बरखंडेन सम्वीतो निशि
चन्द्रमा:॥ तेनैव च दिवा भानुर
होदौर्गत्यमेतयो:॥१५॥

کند سایہ بجاہ و جہد ابرے
ذلت مید ہد یکبارہ ابرے

بجز گردش نہ حاصل ہیچ اشیا
تعجب مرگ را ہم نیست [illegible]

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वा
पि विषया वियोगे को भेदस्त्यज

नारी पीन पयोधरोरु युगलं स्वप्ने ऽ
पि ना लिङ्गितं मातुः केवल मेव यो
वन वन च्छेदे कुठारा वयम् ॥ ११॥

نه کردم بندگی حق را سپاسی · نشدم تارک از دون دنیا به پاسی
نه خیرات کرده آسان شود دشوار · به جنت سهر ما باشد بد دشوار
نه کردم عیش با پستان سیمی · نه دیدم خواب از حوران جبینی
نه ساقی حور را کردم کمر من · نه سینه را به سینه در برم من
چه کردم تلخ تو عمرے ما در · که زاده شد ما فاسق و فاجر

भोगा न भुक्ता वय मेव भुक्ता स्तपो
न तप्तं वय मेव तप्ता : ॥ कालो न
यातो वय मेव याता स्तृष्णा नजी
र्णा वयमेवजीर्णा: १२

نه خواهش وصل رفته سیر وم من · نه آتش را پرستم سوختم من
نه رفتم بجل ما رفتیم آخر · نه رفتم وقت ما رفتیم آخر

क्षान्तं न क्षमया गृहो चित सुखं त्य
क्तं न संतोषत : सोढा दु : सह शीत
वात तपना : क्लेशान्न तप्तं तप : ॥ ध्या
तं वित्त महर्निशं नियमितु प्राणैर्न
शंभो पदं तत्तत्कर्म कृतं यदेव मुनि

छ्योत्स्यानं घन तिमिर रुद्धे च नयने
अहो धृष्ट:कायस्तदपि मरणा पाय
चकित:॥९॥

نه خواهش ماند باقی سے نے زیاران
نه چشم گوش نهوش از عقل باقی
زپیری رعشه شد در جسم یاران
و لیکن از مرگ خوف اکنون هست باقی

हिंसा शून्यमयत्न लभ्य मशनं धा
त्रा मरुत्कल्पितं व्यालाना पशव
स्तृणां कुर भुज: सृष्टाःस्थली शायि
न: ॥ संसारार्णव लंघन क्षमधियां
वृत्ति: कृता सा नृणां या मन्वेषय
तां प्रयान्ति सततं सर्वे समाप्तिं गु
णा:॥१०॥

نه خوف جان کشتی بی رنج حاصل
به حیوان کاه خوردن بر زمین رام
عبور دیر فانی ترک لذات
به انسان داد خدمت حق پرستی
به ماران باد حق کرده محاصل
به انسان داد خدمت حق را کام
و طالیف ور دروزه ترک بد ذات
که حق بود انچه حق کرد حق پرستی

न ध्यातं पदमीश्वरस्य विधिवत्
संसार विच्छित्तये ॥ स्वर्गद्वारकपा
टपाटन पटु धर्मोऽपिनोपार्जित:॥

जन्म जरा विपति मरण त्रास श्च नोत्प
द्यते पीत्वा मोह मयी प्रमाद मदिरा
मुन्मत्त भूत जगत् ॥७॥

ز رفتار قمر در روز و شبها کم میشود عمر ز بود و مرگ پیری خوف هم در دل نمی آید	ز بار دیر فانی سینه را کم فتد خبرے عجب نوشیده الفت دیر گردی میشود عمرے

दीना दीन मुखैः सदैव शिशुकैरा
कृष्ट जीर्णाम्बरा क्रोशद्भिः क्षुधि
तैर्नरै र्न विधुरा दृश्येत चेद्गेहिनी
याच्ञा भङ्ग भयेन गद्गद लसत्त्रु
ट्यद्विलीना क्षरं को देहीति वदे
त्स्व दग्ध जठरस्यार्थे मनस्वी जनः ८

ز بس مفلس انسان کشد و لقش طفل گریان ز خوف دریا بها بدر در شد خواهش کنان	ز گرسنگی عاجز زن فریادی شد با که باشد کو گوید بجز عریان مفلس زنان

ज़िबस्मुफ़लिसइन्सांकशददलके शफ़्तिफ़लगिरियां ज़िगुरसनगी
बा आजिज़ज़िज़नफ़रयादीशुदवसा ज़िख़ौफ़े दरयांहाबदरदरशुदख़्वा
हशकुनां किबाशदकोगोयदबज़ुज़ गुरबां मुफ़लिस ज़िनान्

निवृत्ता भोगेच्छा पुरुष बहुमानो
विगलितः समानाः स्वर्याताः सप
दि सुहृदो जीवित समाः ॥ शनैर्य

कया काकव तृष्णे दुर्नीति पाप कर्म
निरते नाद्यापि संतुष्यसि ॥ ५॥

گردیدم قلعه‌ها و کوه و دریا حاصل نشد یک درم خوردم بلکه بلقمه دیگر با خوف چون زاغها	کردم تکیه ک زخود و نفس خود را شد بندگی بی‌حاصل حرص کم بخت گناه شدی اکنون صبر را بگیر

गर्दीदं क़िल हाव कोह दरयाह हासिल न शुद राक़ वरं कर्दं तकीज़िर
दन फ़स्त ख़ुदरा शुद बंदगी बे सिला ख़ुर्दं बलकि मज़ हिलत बलद दीगर बा ख़ौफ़
चूं ज़ाग़हा हिर्से कम बख़्ते गुनाह शुद ई उ क्नू सब्र बगीर ॥ ५॥

खलोल्ला पाः सोढा कथमपि तदारा
धन परै र्निगृह्यान्तर्बाष्पं हसित
मपि शून्येन मनसा ॥ कृतश्चित्तस्त
म्भः प्रहसित धिया मञ्जलि रपि –
त्वमाशे मोघाशे किम परमतो नर्त
यसि माम् ॥ ६॥

بدو نان بندگی بهر دو نان بود درونم پر ز اشک و روی شادان نشد حاصل مرا بی نقش چیزی	کشیدم خنده شان بهر دو نان بود گزیدم تا گزیدی بها ز نادان کجا رقصانی از بهر چیزی

आदित्यस्य गतागते रह रहः संक्षी
यते जीवितं व्यापारै र्बहु कार्यभार
गुरुभिः कालोन विज्ञायते ॥ दृष्ट्वा

نہ شد پیدا کسی در دہر فانی
کنند کو کارہای نیک فرجام
بہشتی حور را باشد دران سیر
لہذا ترک دنیا واجب آمد

اگر گذراند بہ عیش جاودانی
کہ ثمرش می برد در جنت انجام
چو شد آخر بیارد باز در دیر
کہ بہر راہ حق این فاجر آمد

उत्खातं निधि शंकया क्षिति तलं
ध्माता गिरे र्धातवो निस्तीर्णः सरि
तां पति र्नृपतयो यत्नेन सन्तोषिताः
॥ मन्त्रा राधन तत्परेण मनसा नीताः
श्मशाने निशाः प्रासः काण वराट
कोऽपि न मया तृष्णेऽधुना मुञ्च
माम् ॥४॥

ز بہر زر زمین را چاک کردم
بہ دریا گشت و شہ را ناز داری
شب تیجور را چون روز زد بردم
کنون خواہش کہ این در ما نیاید
کنون خواہش ز خواہش میکنم ما را رہائی دہ

بہ کوہ و دشت کان را راہ بردم
وظایف را قبوران جای تاری
ولیکن حبہ از قسمت نچیدم
کہ درمان بہ ازین از ما نیاید
کہ از بند توسن برآمدم ما را رہائی دہ

भ्रान्तं देश मनेक दुर्ग विषमं प्राप्तं
न किञ्चित्फलं त्यक्त्वा जाति कुला
भिमान मुचितं सेवा कृता निष्फला
भुक्तं मान विवर्जितं परि गृहे साशं

श्रीगणेशायनमः॥

अथ वैराग्य शतकं

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नाऽनन्त चिन्मात्र
मूर्तये॥ स्वानुभूत्येक मानाय नमः शा
न्ताय तेजसे॥१॥

کنم من سجده بهر خالق داوار و داور را
نه پوشیده نه پوشیده از جهات نور حق انور

که یکسان نزد او ظاهر و باطن نیک و فاجر را
قدیر و کبریا و قادر و ستار و ناصر را

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदू
षिताः॥ अबोधोपहताश्चान्ये जीर्ण
मङ्गे सुभाषितम्॥२॥

عقلمندان به خودبینی توانگر را توانائی

جهالت جاهلان را داد ورزان تا توانائی

न संसारोत्पन्नं चरित मनु पश्यामि कु
शलं विपाकः पुण्यानां जनयति भ
यं मे विमृशतः॥ महद्भिः पुण्यौघै-
श्चिर परिगृहीताश्च विषया महा
न्तो जायन्ते व्यसन मिव दातुं विष
यिणाम्॥३॥

अथ वैराग्यशतकं

वैराग्येसंचरत्येको नीतौभ्रम
तिचापरः॥ शृंगारेरमतेकश्चिद्भुवि
भेदाःपरस्परम्॥९९॥

یکی انصاف گیرد کس فقیری	یکی در عشق میماند ظهیری
بدنیا یک زیک نقشیست دیگر	شناسیدن خدا بس نو دیگر

यद्यस्यनास्तिरुचिरं नास्मिंस्तस्यास्पृ
हामनज्ञोपि॥ रमणीयेऽपिसुधांशौ
नमनःकामःसरोजिन्याः॥१००॥

بآن کس دل نخواهد عیش کردن	نه بیند وصل از بیدا و بردن
نه نیلوفر شگفتد در شب ماه	که دارد در قمر دل بسته را راه

इतिशृंगारशतकम्

किं कंदर्प करं कदर्थयसि किं कोदंड
टंकारितै रे रे कोकिल कोमलं कल
रवं किं त्वं वृथा वल्गसे ॥ मुग्धे स्निग्ध
विदग्धमुग्धमधुरैर्लोलैः कटाक्षैर
लम् चेतश्चुम्बितचंद्रचूडचरणध्या
नामृतं वर्जते ॥६७॥

چرا تر ساقی ای نفس زآواز
چرا ای خوش گلو کل سرائی
چرا ای زن کنی ناز و کرشمه
بپای شب ز دل آویختم دل

کمان خویش را توده به پرواز
زبهر ما مکن کاین نغمه رائی
میفکن ناوک از سهرم زچشمه
نهادم لطف و عیش دیگر و رنگل

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंचारज
नितम् तदा सर्वं नारीमयमिदमशे
षजगदभूत् ॥ इदानीमस्माकं पटु
तरविवेकांजनदृशाम् समीभूता-
दृष्टिस्त्रिभुवनमपिब्रह्ममनुते ॥६८

به شهوت نفس تا یکی باند جسم
کنون از نفس چون برداشتم دل
چو نظرم بست در معبود مطلق

نمایان شد جهان چون زن بچشم
مجازی را حقیقی کرد در رنگل
نماند حسن حقیقی حق مطلق

सुभ्रं सद्म सविभ्रमा युवतयः श्वेतात
पत्रोज्वला लक्ष्मी रित्यनुभूयते स्थिर
मिव स्फीते शुभे कर्म्मणि ।। विच्छिन्ने नि
तरामनगकलह क्रीड़ा त्रुटत्तन्तुकम्
मुक्ता जाल मिव प्रयाति झटिति भ्रश्य
द्दिशो दृश्यताम् ।।८५।।

مکان صاف آراسته ریخته
زن خوبرو ناز و عشوه گذار
چو زر مشتعل عیش ساز و مدام
زبونی کند ورد می عیش گرد

دل عاشقان در وے آویخته
سریر خوش و شبنمی استوار
به ایام نیکی شود شاد و کام
شکسته چو بالای پیر مرده مرد

सदा योगाभ्यास व्यसनवशयो रात्म
मनसो रविच्छिन्ना मैत्री स्फुरति यामि
नस्तस्य किमुतेः ।। प्रियाणामालापै
रधरमधुभिर्वक्त्र विधुभिः सनि
श्वासामोदैः सकुचकलशाश्लेषसु
रतैः ।।८६।।

بلا لغزش چو دل در حق نهاد وے
چه الفتش به خفیا گرد هر دو
فتاد به وصل سینه مالش به پستان

محبت در دل و جان شد زیاده
تکلم خوبرویان خوش دیدن
شود کانرا که خواهش سوی رضوان

نزارد دل بزن هر کس فهیم است	بدان بر او خدا از بس رحیم است

यालेलीलामुकुलितममीसुन्दराहष्टि
याला: किंक्षिप्यन्तेविरमविरमव्यथै॥
य श्रमस्ते ॥सम्प्रत्यन्येवयमुपरतं बाल्य
मास्थावनान्ते क्षीणोमोहस्तृणमिवजा॥
ज्जालमालोकयाम:॥६३॥

شنو ای بی زن چرا این نظر بازی	شوی شرمنده از این ترک تازی
که دل برداشتم از سیر این دیر	نهادم دل براه حق پی سیر
روم جایی که نه خواهش دگر بی ما	که دنیا دون چو خس شد در نظر ما
بکن آرام بهر هم دل میازار	که بس گشتم ز دیدار تو بیزار

इयंबालानांमत्यनवरतमिन्दीवरदल
प्रभा चोरंचक्षु:क्षिपतिकिमभिप्रेतमस
नया गतोमोहो:स्माकंस्मरशबरबाण
व्यतिकरज्वलज्ज्वाला:शान्तास्तद
पिनवराकीविरमति॥६४॥

بناز و غمزه بر ما چون فدا ای	چرا تیر نگه بر ما رها ای
چه حاصل خواهی از ما تارکم من	شده سخ نفس آتش تارکم من
چرا این بی وقوفی از پی ما	گذشتم من زحد از سیر دنیا

वेश्यासौमदनज्वाला रूपेन्धनसमे
धिता ॥ कामिभिर्यत्र हूयन्ते यौवना
निधनानि च ९०॥

طوائف خوبروا بنوه همه
بسوزاند جوانی را و زر را
درو آتش نهان از نفس خیمه
شهد سوزند رو یک نفس یارا

कश्चुम्बति कुलपुरुषो वेश्याधर
पल्लवमनोज्ञमपि ॥ चारभटचोरचे
टकनटविटनिष्ठीवनशरावं ॥९१॥

طوایف سیمبر خوش رو حریفان
زناکاران و مجرد سهات و دزدان
چلبی رو طوالف شهر اینهاست
نگیرند از لبش بوسه ظریفان
ز خنیاگران ناقل و ساحر نوردان
لب‌آشتر مندگی بوسه ز شهر فاسقت

धन्यास्त एव तरलायतलोचनाना
म् तारुण्य रूप घन पीन पयोधरा
णाम् ॥ क्षामोदरोपरिलसत्त्रिवली
लतानाम् दृष्ट्वाकृतिं विकृतिमेति
मनो न येषाम् ९२॥

دو چشمان صعوه یا آهو غزاله
کمر باریک شکمش بشکل قاقم
جوان و سینه چون سرخاب زاله
خوشا نفسی که افتاده به قاقم

न गम्यो मन्त्राणां नच भवति भैषज्य
विषयो नचापि प्रध्वंसं व्रजति विवि
धैः शान्तिकशतैः ॥ भ्रमावेशादंगे
किमपि विदधद्भव्यमसमम् स्मरोऽप
स्मारोयं भ्रमयति दृशं घूर्णयति च ९८

نه قابل سحر و نه لایق دواسے
بهسکهه پرده بوده ودر ره حق
شده و هر کس که تابع شهوت و نفس

چه از خواندن وظایف آسمهاسے
نماید خویشتن را خورده دق
به بیند در نظر هر وقت یک نقش

जात्यंधाय च दुर्मुखाय च जराजीर्णा
खिलांगाय च ग्रामीणाय च दुष्कुला
य च गलत्कुष्ठाभिभूताय च ॥ यच्छ
न्तीषु मनोहरं निजवपुर्लक्ष्मीलव
श्रद्धया पण्यस्त्रीषु विवेककल्पल
तिका शस्त्रीषु रज्येत कः ॥९९॥

بجا درزاد نابینا و بدشکل
شده هر عضو و پریش چون دوک
خدایے برصی و کرم افتاده
بشر در راه جنت رسید نار
به جسم نازیبا و عیش سازد

زپیری ضعف شده و رشرب هم اکل
به کمتر ذات دیهاتی و چون خوک
طوالف بهر زر دل را نهاده
طوالف را بهر دل کوپے نار
بشر فاکوست گویا او بیا زد

مرو در وی که بد باشد بانجام	که ماند از و غارت گر کام

व्यादीर्घेण चलेन वक्रगतिना तेज
स्विना भोगिना नीलाब्ज द्युति नाहि
ना घर महं दष्टो न नच्चुस्तषा ॥ दष्टे
संति चिकित्स कादिशि दिशि प्राय
ण धर्मार्थिनो मुग्धा क्षी क्षण वी
क्षितस्य नहिमे वेद्यो न चाप्योषधं ६६

کلان سر تیز رفتارش گره دار	کبودی مثل نیلوفر کلان مار
همان به از گزندش دور بودن	گزد گر سهر آنش تریاق سودن
اطبا اهل یونانی و از هند	دوا دارند و هم مرهم و هم بند
وسیله کان را گزدن تو جوابی	نباشد داروایش درد و جانی

इह हि मधुर गीतं नृत्य मे तदूसोय
म् स्फुरति परिमलोऽसौ स्पर्श एष
स्तनानाम् ॥ इत इत पर मार्थै रिंद्रि
यैर्भ्राम्यमाणो स्वहित करण दक्षैः
पंचभि र्वंचितोऽस्मि ॥ ६७ ॥

به دنیا شهوت و غنیان و رقاص	مساس سینه و خوش بوی و نخاس
ازینها تو شدی ناری و شادی	تو ناری از حق و رنج نمادی
همین نفس ازین بیت دشمن شده ست	نگار دجا بجا دشمن شده است

पथे श्रतुर वनिता भोगि ग्रस्तं त्यज
नि हिम त्रिण: ॥८३॥

تو ناوک جسم را دان مثل اخگر
ادا و ناز را دان چون سر مار
زافسون و دوا از مار خورده
ولیکن راکه زن افعی گزیده

نهاده دل در و چون تیز خنجر
اگر دا نشوزمی دل باز بردار
رساند سو و بهر رنج برده
گریز دگر طبیعت عالم گزیده

विस्तारितं मकर केतन धीवरेण-
स्त्री संज्ञितं बाडि शमत्र भवाम्बु
राशो येना चिरा त्तद धरा मिष लो
ल मर्त्य मत्स्या न् विकृष्य पचती
त्यनु राग वन्हौ ॥८४॥

زصیاد نفس دریاپی این دیر
در و از لب نهاده طعمه خام
کشیده پوست او را میدر دلبس

نهاده جبل زن پر عشوه و سحر
چو ماهی آمده انسان در دام
به آتش عشق او را می پزد بس

कामिनी काय कांतारे कुच पर्वत
दुर्गमे ॥ मास चर मन: पान्थ तत्रा
स्ते स्मर तस्कर: ॥८५॥

شنو ایدل که جسم نازنینان

چو دشت ابذوه پستان کوه نبیان

بباسشل لب آبش رسیدن
بفهم ادل اگر عزتی تو دروسے
اگر خواهی تو ترک ذیرذر یا

تشنگان را درو بالیست دیدن
رسی در سحر برائے نہ از وسے
زجو آسان زنان تو دور در آ

जल्पान्ति सार्द्ध मन्येन पश्यंत्यन्यंस
विभ्रमा: ॥ हृदये चिन्तयन्त्यन्यं प्रि
य: को नाम योषिताम् ॥९१॥

بیک کس گفتگو با دیگرے تاز
وفا از فرقہ نسوان نباشد

بہ الفت دیگرے را میکند ساز
اگر باشد ز فرقہ زن نباشد

मधु तिष्ठति वाचि योषितां हृदि हा
ला हलमेव केवलं ॥ अत एवनि पी
यते ऽधरो हृदयं मुष्टिभि रेवताड्य
ते ॥९२॥

زبان زنان پر ز آب حیات
بکند از زبان زنان مست حال

دل ایشان پر از سم قاتل صفات
بہ سینہ زنان میکند مشت مال

अपसर सखे दूरा दस्मात्कटाक्षवि
षानलात् प्रकृति विषमा द्योषि
त्सर्पा द्विलास फणा भृत: इतर फ
णिना दष्ट: शक्या श्चिकित्सितुं मो

گل نیلوفری را بو چنان داد | که گردد گرد او ششپا ز بیداد

यदे नत्पूर्णेंदु द्युति हरदुदा राकृति
वरम् मुखाब्जं तन्वंग्याः किल वसति
तत्राधर मधु ॥ इदं ताव त्पाकद्रु
म फल मिवा तीव विरसम् व्यतीते
ऽस्मिन्काले विष मिव भविष्यत्यसु
खदं ॥७९॥

زنان خوبرویان ماه پاره | لبانش را چه با بد بدریا را
شنیدستم حیات آب در لب | رسیده بر که دارد و ذائقه لب
گذشته از رسیدن را برود ور | زنان را چون رسیدش و رشد نو
نماند از رو جز شور و تلخی | بران هم زال را چون مار تلخی

उन्मील त्त्रिवली तरंग निलया प्रोत्तुं
ग पीन स्तन द्वन्द्वेनोद्यत चक्रवाक
मिथुना वक्त्रांबुजो द्भासिनी कांता
कार धरा नदी यम मित: क्रूराशया-
नेष्यते संसारार्णव मज्जनं यदि तनो
दूरेण संत्यज्य नाम ॥८०॥

بران فرج زنان را اشتا تالاب | در و پستان چون یک جفت سرخاب
در و در ویش چه نیلوفر شگفته | چوئی در شکل زن آمد نهفته

حذر این سبے ادب جاے شکوکات
به حد ها مکر و ریب بگد جنبت
نه قابل اعتبار و بے یقین لب
فریب و ریح تیرا ز امرت و زهر
چنان نقیضے که سر زد در جهانی

محل تعجیل هم مخزن گناهات
بدوزخ پیے برد بے فکر و منت
یقین کن را لبا رت می برد لیس
فریبنده باس از مهر و از قهر
چه نامش وا ذزن اندر جهانی

सत्यत्वेन शशांक एष वदनी भूतो न
वेंदीवर द्वन्द्व लोचन तां गतं न क
नकै रप्यंगयाष्टि : कृता॥ किंत्वे वं
कविभि : प्रतारित मन स्तत्वं विजा
नन्नपि त्वं मांसा स्थि मयं वपु र्मृ
ग दृशां मन्दो जन: सेवते ॥७७॥

نه رو چون مه نه چشمش هم چو خلزاد
شریفان شاعران تشبیه گفتند
به عقل دانش و گم کردگان راه

نه جسمش هم چو زر لیس گفتگو زاد
به قافی جسم در معنی شنفتند
به تعریف زنان مشغول شداه

लीला वतीनां सहजा विलासास्
त एव मूढस्य हृदि स्फुरंति ॥ रागो
नलिन्या हि निसर्ग सिद्धस् तत्र
भ्रमत्येव मुदा षडंघ्रि: ॥७८॥

صفت ذاتی زن آنست عشوه ناز
بجوش آرد دل نادان طناز

اگر بوسه گشند در یک نفس بس — چرا نام زنان دنیا نهد کس

तावदेवा मृतमयी यावल्लोचन गो
चरा ॥ चक्षुः यथाद्रूप गता विषा द
प्याति रिच्यते ॥७४॥

به پیش چشم چون آبحیات است — به دوری سم قاتل جان خراش است

ना मृतं न विषं किंचि देकां मुक्त्वा नि
तम्बिनीम् ॥ सैवा मृतलता रक्ता वि
रक्ता विष वल्लरी ॥७५॥

نه آب حیات است و نه سم قاتل
به الفت و مهر جان به آب حیاتی — بمهر و سبز و مهر دوا زراست و باطل
به نفرت سم سهمر جان خراشی

आवर्तः संशया नाम विनय भवनं प
त्तन साहसा नाम् दोषाणा सन्निधा
नं कपट शत मयं क्षेत्र मप्रसया ना
म् ॥ स्वर्ग द्वारस्य विघ्नो नरक पुर
मुखं सर्व माया करण्डम् स्त्रीयन्त्रं
केन सृष्टं विषम मृत मयं प्राणिनां
मोह पाशः ॥७६

نماید گر جوان با چنین زنها و هم خنیا	چه گویم من با و بهتر که بهتر شد درین دنیا

अथ कामिनी गर्हण प्रशंसा

कान्तेत्युत्पल लोचनेति विपुलश्रो
णी भरेत्युत्सुकः पीनोत्तुंग पयोधरेति
सुमुखाम्भोजेति सुभ्रूरिति ॥ दृष्ट्वा मा
द्यति मोदतेऽभिरमते प्रस्तौति जानन्न
पि प्रत्यक्षाशुचि पुत्रिकां स्त्रियमहो
मोहस्य दुश्चेष्टितम् ॥७२॥

اگر عاشق به بیند نقش محبوب	شد دل اندر وچون وصل مرغوب
چو شد غلط سازد با دل و جان	کند تحسین حسنش با دل و جان
توئی مهر و توئی نیلوفری چشم	خوشا باریک پهن و در میان جسم
دو پستان تو سرخاب اند یا کوه	خوشا غلط اندر و ابرو کمان زده
به بیند خوش بود تعریف سازد	تعجب تا کجا دل بر گمارد

स्मृता भवति तापाय दृष्टा चोन्माद
वर्द्धिनी ॥ स्पृष्टा भवति मोहाय सा
नाम दयिता कथम् ॥७३॥

इति यौवन प्रशंसा समाप्ता

شنیدن سوز در دل سی فزاید	ز دیدن شوق و شهوت می در آید

रागस्यागारमेकं नरकशतमहादुःख
सम्प्राप्तिहेतुर मोहस्योत्पत्तिबीजं जल
धर पटलं ज्ञानताराधिपस्य ॥ कन्द
र्पस्यैकमित्रं प्रकटितविविधस्पष्टदो
षप्रबन्धम् लोकेस्मिन्न ह्यनर्थोनि
ज कुल दहनं यौवनं दन्यदस्ति ॥७०॥

جوانی هست یک گنجینهٔ عیب جوانی هست خانهٔ خواهشان را و نهد تکلیف تخم حرص هست این وزیر شهوت و شاه تکالیف بدیها در جوانی میشد هر رو	شود روشن نفس از عالم الغیب جوانی هست خانهٔ دوزخان را پئے مهٔ نور ابر سیاه هست این نخوشی نسلان بدی میکرد تالیف بگویم راست پئے فرق سر مو

शृंगारद्रुम नीरदे प्रचुरत: क्रीडारस-
स्रोतसि प्रद्युम्न प्रियबांधवे चतुरता
मुक्ता फलोदन्वति ॥ तन्वी नेत्र चको
र पारण विधौ सौभाग्यलक्ष्मी निधौ-
धन्य: कोऽपि न विक्रियां कलयति प्रा
प्ते नवे यौवने ॥७१॥

پئے دادن سبز حسن آب او سینه سان بوده برای شهوت و هم بهر بیاری پر از گوهر شنیده او گنجینه زر از گلشن سو یا گنجینه ظاهر کرد	پئے بست کردن معدن شد بهر دل توده تذرو چشم محبوبان نماید رسان جوهر بگویم زن از دیگر تا چه باشد همی نماید فرد

بکوهستان شفاف شده سنگ	که می شوید دمادم آب از گنگ
هجوم شاخ بر در کوه گنجان	نمایان مثل نندی گاو ذی شان
به کوهستان نه بودے مسکن زهد	نه سر سودی بگوشه عابد از زهد
نبود زن نه کردے سجده از فکر	ز زن ترسا رود در سجده و ذکر

संसार तव निस्तार पदवी न दवी
यसी ॥ अन्तरादुस्तरानस्यु र्यदि
रे मदिरे क्षणा:॥६८॥

نه بودی زن اگر در دیر فانی	بدی آسان نیاره جاودانی

अथयौवनप्रशंसा

राजन्तृष्णांबु राशे र्नहि जगतु गत:
कश्चिदेवावसानं कोवाथोर्थैः प्रभू
तैः स्वव पुषि गलिते यौवने सानुरागे।
गच्छामः सद्म तावद्विकसित नयने
दीवरालोकनानाम् यावच्चाक्रम्य-
रूपं झटिति न जरया लुप्यते प्रेयसी
नाम॥६९॥

ندیدم ترک کو کرده هوس را	جوانی رفت و پیری شد هوس را
شده مادی به نظاره چشمان	رود از شوق در ره سیم جسمان
و لیکن تا کسی که ماند نور در حسن	به پیری کس نمی پرسد پئے حسن

اگر شهوت آن کس نه کند بس　　رود کوه گران بر آب چون خس

संसारे ऽस्मिन्नसारे कुनृपतिभुवन
द्वारसेवा कलम्ब व्यासंगव्यस्त धैर्यं
कथममलधियोमानसं संविदध्यु:
यद्येता: प्रोद्यदिंदुद्युतिनिचयभृतो
न स्युरम्भोजनेत्रा: प्रेंखत्कांचीक
लापा: स्तनभरविनमन्मध्यभागास्त
रुण्य:॥६६॥

زلبن تابان چون صد بدر یکجا　　خوشا رو خوش گلو در دیر یکتا
خمیده شد ز بار سینه جسمش　　چو گل نیلوفری از خم چشمش
نبودی زن اگر در دیر فانی　　نگردی کس غلام حکمرانی
جوانان عقلمندان صاحب حال　　نبودی پیش شاهان عجز و پامال

सिद्धाध्यासितकन्दरे हरवृषस्कंधा
वगाढद्रुमे गंगाधौतशिलातले हिम
वत: स्थाने स्थिते श्रेयसि ॥ क:कु
र्वीत शिर: प्रणाममलिनंम्लानं मन
स्वीजनो यद्वित्रस्तकुरंगशावनयना
नस्यु:स्मरास्त्रं स्त्रिय:॥६७॥

صلاح نفس اماره به گیهان　　زبان چشم نیلوفر جبینان

स्त्रीमुद्रां झषकेतनस्यजननींसर्वा
र्थसम्पत्तिकरीम् येमूढाप्रविहायया
न्तिकुधियोमिथ्याफलान्वेषिण :॥
तेतेनैव निहत्य निर्दयतरंनग्नीकृता
मुण्डिता: केचित्पंचशिखीकृताश्च
जटिला: कापालिकाश्चापरे॥६४॥

قباب خورده پس هر کس دیدرو
نه گشته نفس اماره ازان پیش
به آخر میشود گشته زشهوت
کسی اصلاح سر خود میکناند
جٹا در سر کسی پا دست کرده

شود بی عقل کم فهم و قسم خو
کند ترک زنان بی حکمت خویش
بی رحمی کند عریان زشهوت
کسی پنج جعد در سر میکنانند
کسی پالنگ کس از شوق مرده

विश्वामित्र पराशर प्रभृतयो वाता
म्बुपर्णाशना स्तेऽपि स्त्रीमुखपंकजं
सुललितं दृष्ट्वैव मोहंगता : ॥शाल्य
न्नं सघृतं पयोदधियुतं भुंजान्ति ये
मानवा स्तेषामिन्द्रियनिग्रहो यदि भ
वेद्विन्ध्यस्तरेत्सागरम् ॥६५॥

زبرگ و آب باد و در بیابان
وسیلے خویش رو زن با حور بهشتی
کند هرکس غذا از روغن و شیر

غذا کرده زشوا مت تا بان
بدیدن غرق شد دریا چو کشتی
زجغرات و برنج و طعام تدبیر

शास्त्रज्ञोऽपि प्रथितविनयोऽप्यात्म
बोधोऽपि बाढम् संसारेस्मिन् भव
ति विरलो भाजनं सद्गतीनाम् ॥ येनै
तस्मिन् निरय नगर द्वारमुद्घाटयन्ती
वामाक्षीणां भवति कुटिलभ्रूलता कु
ञ्चिकेव ॥६२॥

به صرف و نحو شاغل و واقف علم
به مشکل میرسد کس عاقبت خویش
بلا براین جسم انسان هست یک شهر
سنان تیر و کمان و خنجر و تیغ

و یا زاهد که دارد حد در علم
نه سازد خویشتن را از هوا ریش
اگر حمله بزن باشد بعید قهر
بیکدم میگذارد برق چون میغ

कृशः काणः खञ्जः श्रवण रहितः
पुच्छ विकलो व्रणी पूय क्लिन्नः
कृमि कुल शतैरा वृत तनुः ॥ क्षुधा
क्षामो जीर्णो मृन्मय कपालार्पित
गलः शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च
हन्त्येव मदनः ॥६३॥

ببالاغر و صم و بکم یا لنگ
کرم افتاد از حد گرسنه هم
بانیحالت رسیده سگ ز شهوت
کند این نفس ما را اینچنان خوار

به یک چشم و زخم ریم سیلی تنگ
رسیده عمر طوق از گلو خم
رود دنباله سگ ماده ز شهوت
که گرد او شهر را از نیک کردار

देवेन्द्रियाणां लज्जांतावद्विधत्तेविनय
मपिसमालम्बतेतावदेव ॥ भ्रूचापा
कृष्टमुक्ता: श्रवणपथिगता नीलपक्ष्मा
ल: णएते यावल्लीलावतीनां नहृदि धृतिमुषो
दृष्टिबाणा: पतन्ति ॥५९॥

بماند راستی در راست بازان
دگر مه رو کشد ابرو کمان را
نباشد کس گزو یابد رهائی

حیا و شرم ماند تا به انسان
دهد سر تیر مژگان صید جان را
که داند خویشتن را در خدائی

उन्मत्तप्रेमसंरम्भा दारभन्तेयदंगना:
तत्र प्रत्यूहमाधातुं ब्रह्मा पि खलु का
तर: ॥६०॥

کند وصل گر بو الهوسین بی حجاب
کرا دل که دل بر نهد از رخش

کند نازو غمزه ادا در شباب
چه طاقت که بر جا شود باز پس

तावन्महत्त्वंपाण्डित्यं कुलीनत्वंवि
वेकिता ॥ यावज्ज्वलतिनांगेषु हत:
पंचेषुपावक: ॥६१॥

لیاقت علمیت خوش خاندانی
بماند تا نگردد دست نخل عیشش

تحمل غور و همت جاودانی
که نار پنج سر آرد بر و طیش

ण्डितानां ॥ जघन मरुण रत्न ग्रंथिका
ञ्ची कलापंम कुवलय नयनानां कोवि
हातुं समर्थः ॥५६॥

زحافظا صاحب تقریر حاصل
وے بے مشکل کہ ترک مہ جبینان

نماید ترک گیر از بر چہ کامل
کند گیرد رہ گوشہ نشینان

स्वपर प्रतार कोऽसौ निन्दति यो लीक
पंड़ितो युवतीः यस्मात्तप सोऽपि फलं
स्वर्गस्तस्यापि फलं तथा प्सरसः ॥५७

کند ہر کس مذمت ماہرویان
چرا از فقر و زہد است حاصل نور

چہ حاصل گفتن بد ماہرویان
بہشت ہست و آنجا حاصل حور

मत्तेभकुम्भ दलने भुवि सन्ति शूराः
केचित्प्रचण्ड मृग राज वधेऽपि दक्षाः
किंतु ब्रवीमि बलिनां पुरतः प्रसह्य
कन्दर्प दर्प दलने विरला मनुष्याः ५८

توان فیل را کرد قابو جوان
و لے بس کہ مشکل کشتن نفس را

توان کشتن شیر در یک زمان
کسے نام آورد در جہان مرد را

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति स नरस्ताव

بگویم بشنو اینجا تا ان من این — که ماند اندرین دنیا و یا دین
یکی باید زن خوش رو جوان نو — شود از صحبت خود همچو بانو
و یا باید کند گوشه نشینی — نه بیند از چه نا بینی و بینی

सत्यं जना वच्मि न पक्षपातात् लोके
षु सर्वेषु च तथ्यमेतत् ॥ नान्यन्मनो
हारि नितम्बिनीभ्यो दुःखैक हेतुर्न
च कश्चिदन्यः ॥५४॥

بگویم راست بشنو ای عزیزم — نه جانب داری و نی از فریبم
درین دنیا بجز زن نیست زنهار — بغارت می برد از ذکر کردن
کسی کو طالب حق راست با زیست — نه بیند زن که در زن حیا بسیار نیست

अथ दुर्विवेक प्रशंसा

ताव देव कृति नामपि स्फुरत्येष नि
र्मल विवेक दीपकः ॥ याव देव न कु
रंग चक्षुषां ताड्यते चपल लोचना
चलैः ॥५५॥

شود روشن چراغ زاهدان حد — نراند تیغ آهو چشم از کد

वचसि भवति संगत्याग मुद्दिश्य वा
र्ता श्रुतिमुखर मुखानां केवलं प

नाख्येयः स्फुरति हृदये कोऽपि महिमा
॥५१॥

بمطلب پاکی مطلب درین دیر
بداند لغو دل در روے نه بندد
نفود عالی کند تسخیر دل را

بداند فانی و هر جا کند سیر
وگر بندد دل از حق در به بندد
نه طاقت گفتن حالت زنان را

भवन्तो वेदांतप्रणिहितधियामाप्त
गुरवो विदग्धालापानां वयमपिक
वीनामनुचराः ॥ तथाप्येतद्ब्रूमो न
हि परहितात्पुण्यमधिकं नचास्मि
न् संसारे कुवलयदृशो रम्यमपरम्
॥५२॥

شمایان واقفان علم جاوید
بهار دو کار از امید داری
نباشد به زنان آرام دیگر

و مایان پیر شعرا علم از وید
از آن شیرین سخن بندی گذاری
که وصلش شیء نباید لطف دیگر

किमिह बहुभिरुक्तैर्युक्तिशून्यैः प्रला
पैर्द्वयमिह पुरुषाणां सर्वदा सेवनी
यम् ॥ अभिनवमदलीलालालसं सु
न्दरीणाम् स्तनभरपरिखिन्नं यौवनं
वा वनं वा ॥५३॥

کند حرکات شهوت خود چه با زن
ز تیزی خویش جنباند چه زلفش
بوقت شوق سسکاری بگیرد
چو تشنه بیره به پستانش نمودار
خوشا زانگشت بر ولرزان ز سردی
زنان را امید بکسل از لب خویش

همان حرکات از با دست از زن
بگیرد بوسه از رخ ان زن زلفش
همان از کثرت سردی بگیرد
ازین مالش به پستانش بدسکار
دهد مالش به لفش یا می شکلی
بشتر است این هوا لقال دلش

केशानाकलयन्दृशोमुकलयन्वासो
बलादाक्षिपन् आनम्रस्तुलकोद्गमं
प्रकटयन्नालिंगयकम्पञ्छनैः वारं
वारमुदारसीत्कृतकृतो दन्तच्छदान्
पीडयन्प्रायः शैशिरएषसंप्रतिमरु
त्कांतासुकांतायते ॥५०॥

هم استشری ز لب بی باک باشد
کشد گیسو کند پستانش را تنگ
دهد قشر بیره گیرد دربرا زبر
دهد دندان بدندان بر لبان لب

چو مالک خانه با زن جفت باشد
بگیرد پارچه از جبر بی ننگ
دهد لرزانی وسسکاری برهر
نماید حرکتی بی خوف بی دب

आसाराःसन्त्वेतेविरतिविरसायाम
विषया जुगुप्स्यन्तांयद्वाननुसकल-
दोषास्पद मिति ।।तथाप्यन्तस्तत्त्वे-
प्रणिहितधियामप्यतिबल स्तदीयो

چو بر لب آب تشنه میگذارند ‎ ‎ نه نوشند گرچه بر قسمت شمارند

हेमन्त दधिदुग्धसर्पिरशनामांजिष्ट
वासोभृतः काश्मीरद्रवसान्द्रदिग्ध
वपुषः खिन्नाविचित्रै रतैः ॥ पीनो
र स्थल कामिनीजनकृताश्लेषा गृहा
भ्यन्तरम् ताम्बूलीदलपूगपूरितमु
खा धन्याः सुखं शेरते ॥ ४८ ॥

غذا از روغن و از شیر و حلوات ‎ ‎ ز رنگ قرمزی پوشاک آراست
ز تشقه زعفرانی زیب بر سر ‎ ‎ ز انواع جماع شد کسل و ربه
دهن پر از تنبول و بوے مرغوب ‎ ‎ به قسمت ور شود این جمله شد خوب
کند عیش و طرب دایم بخانه ‎ ‎ نه خوف راقب و بیمی از بیگانه

अथ शिशिरः

चुम्बन्तो गंडभित्तीरलकवति मुखे
सीत्कृतान्यादधाना वक्षः सूत्कंचुके
षु स्तनभरपुलकोद्भेदमापादयन्तः ॥
ऊरूनाकंपयन्तः पृथुजघनतटात्स्रंस
यन्तो शुकानि व्यक्तं कांताजनानां वि
टचरितकृतः शैशिरा वान्ति वाताः
॥ ४९ ॥

हृशागाढं समालिङ्गयते जाना: शीतल
शीकराढ्यमरुतो वातमन्तु स्वेदच्छि
दो धन्यानां वत दुर्दिनं सुदिनतां या
ति प्रिया संगमे ॥४६॥

ببالاخانه باد افشار بارش
نه طاقت خیزنه تاب جدائی
نشود چسپان زن خوش رو بصد شوق
به طالع ور میسر میشود این

بخواب شوق باشود در کنارش
ز باد سرد چون یابد رهائی
رفع سردی شود هم لطف هم ذوق
که یابد لطف از دنیا و هم دین

अथ शरत्

अर्द्धं नीत्वा निशायाः सरभससुरता
यासखिन्नश्लथांगः प्रोद्भूतासह्य
तृष्णो मधुमदनिरतो हर्म्यपृष्ठे वि
विक्ते ॥ संभोगक्लान्तकान्ताशिथिल
भुजलतावर्जितं कर्करीतो ज्योत्स्ना
भिन्नाच्छधारं पिबति न सलिलं शा
रदं मन्दभाग्यः ॥४७॥

گذشته نصف شب بربالا خانه
به شوق وصل و صل از شوق دل برد
ز بس از تشنگی با مرد مخمور
ز لت لبستن چو شد رنجور آخر

به تنهائی به بهر و اهل خانه
ز جلد کسل شد در جسم پژمرد
که شد از شهوت و مستی چو رنجور
نماید یار دارسیے او به آخر

इतो विषहल्ली विलुसितमितःकेत
कितरोः स्फुरन्ध ःप्रोघजलदनिन
दस्फूजितमितः॥ इतः केकिक्रीडा
कलकलरवःपक्ष्मलहशाम् कथं
यास्यन्त्येते विरहदिवसाःसंभृतर
सा॥४४॥

به یکسوا بر برق افگن نمودار
به زیور خوش تیغ بود اوسپی زر آواز
زن کش شود بود در ره نوردی

به یکسو بود کدر رگل رعد خونخوار
نه از طاوس قامان پرواز
نه ار آمد چه از گرمی و سردی

प्रसूची संसारे नमसि नभसि प्रौढ
जलद ध्वनि प्राप्ते तस्मिन् पतितहृ
षदो नीरनिचये॥ इदं सौदामिन्याः
कनककमनीयं विलसितं मुदंच
म्ला निंच प्रथ याति पथि ध्वेव सुहृ
रां॥४५॥

بماه تیر ابر تیره در دیر
خوشا مهر و که در بر عاشق خویش

فغان رعد و برق و بارش تیر
بر و قیمت و دور افتاده دل ریش

आसारेण न हर्म्यतःप्रियतमै र्यातुं
बहिः शक्यते शीतोत्कम्पनिमित्तमायत

हर्षम्॥४१॥

زخواهش طبع پرشهوت زن خوش
نباشد کس بهوسم هر سگالی

دو پستان گدازش قمقمه وش
نه چینند گل زمار بی مثالی

वियदुपचितमेघं भूमयः कन्दलिन्यो
नवकुटजकदंबामोदिनो गन्धवाहाः
शिखिकुलकलकेकारावरम्याः वना
न्ताः सुखिनमसुखिनं वा सर्वमुत्कंठ
यन्ति॥४२॥

ابر بر آسمان و در زمین خل
وبد خوبی و هم تازه کند دل
بسا خوش مست طاوسان بهر جا

کوه کنج باد قدم خوشبوی صندل
کند اندوه از فرحت مبدل
برد آخر غریبان را به نخاس

उपरि घनं घनपटलं तिर्यग्गिरयोपि
नर्तितमयूराः॥ वसुधा कंदलधवला
दृष्टिं पथिकः क्व पातयतु॥४३॥

زنار ابر شد بر آسمان تار
زمین شد با خلابه لیکه در دل
خوشا هر چیز لیکن شهوت انگیز

به حید کوه طاوسان نمودار
مسافر را خلد چون پای در گل
بدور افتادگان خالد بدل نیز

किरणाः परागः कासारो मलयजरजः
सीधुर्विशदम् शुचिः सौधोत्संगः प्र
तनु वसनं पंकजदृशो निदाघेतूर्णं
तत्सुख मुख लभन्ते सुकृतिनः ३९॥

زگل مالا و باد خوش شب ماه
بُرادهٔ صندل و بهتر مکان صاف
به تابستان ز قسمت میرسد عیش

ز نیلوفر و خشخاش گهی در راه
خوشا هم مه جبین آراسته صاف
چه داند مفلس از کردن عیش

सुधाशुभ्रं धाम स्फुरदमलरश्मिः श
शधरः प्रियावक्त्राम्भोज मलयजरज
श्चातिसुरभि ॥ स्रजो हृद्यामोदास्त
दिदमखिलं रागिणि जने करोत्यन्तः
क्षोभं नतु विषयसंसर्गविमुखे ॥४०॥

مکان شفاف روشن و زشب ماه
برادهٔ صندل و خوشبو ز اقسام
کند کو ترک او را چون خدا این

بخوشبو دار مالا هم رو همراه
به سوز اندز ناکامان اجسام
که می بیند ز حق دنیا و هم دین

अथ वर्षा समय

तरुणी चैषा दीपित कामा विकसि
त जाती पुष्प सुगन्धिः उन्नत पीन
पयोधर भारा प्रावृट्कुरुते कस्य न

رفع سردی شد و آمد بهاری
خزان را برد چون دزدان زر را

نمایان در جهان باد بهاری
برد صرصر چو کهنه بر شجر را

महकार कुसुम केसर निकर भरामो
द मूर्छित दिगन्ते ॥ मधुर मधु विधुर
मधुपे मधौ भवेत्कस्य नोत्कण्ठा ॥३७

زگل هوا معطر یک جهانی
بنفشش با پشت از زردی نشانی
به این موسم نباشد کس درین دیر

خشب شیرین گل نو شد نهانی
نمایان داغ از چشم کجائی
که ناید شهوتش از کردن سیم

अथ ग्रीष्मवर्णनं
अच्छाच्छ चन्दन रसार्द्र करा मृगा
क्ष्यो धारागृहाणि कुसुमानि च कौ
मुदी च ॥ मन्दो मरुत्सुमनसः शु
चि हर्म्य पृष्ठं ग्रीष्मे मदं च मदनं
च विवर्द्धयन्ति ॥३८॥

ز صندل صاف سوده دست تر او
با خوشبو ز عطر و گل بهر سو
شود بر سقف بیند این چنین سیر

فواره در مکان آرا سته او
لتاؤ ماه شب هم باد موزو
نه تابد بر شهوت کیست در دیر

स्त्रजो हृद्यामोदा व्यजन पवनश्चन्द्र

आवास: किल किंच देव दयिता पा
श्वै विलासालस: कर्णे कोकिल का
कलीक लरव: स्मेरो लता माइप:
गोष्ठी सत्कविभि: समं कति पये:
सेव्या: सितांशो: करा: केषां चित्सु
खयन्ति नेत्र हृदये चैत्रे विचित्रा:
स्मया:॥३५॥

دهد آرام در بر تا ز سینے — که داند ناز و عشوه مه جبینی
ز کویل خوش بود آواز مرغوب — و یا صحبت به ذی علمان بود خوب
خوشا موسم بهار و ماه شب چیت — بماه چیت از جنت برد بیشت
نماید خوش به جسم و دل و جان را — ولیکے تکلیف دور افتادگان را

पान्थस्त्री विरहानलाहुति कलामा
नन्वती मंजरी माकन्देषु पिकांगना
भिर्ध्वना सोत्कंठमालोक्यते॥ अप्ये
ते नव पाटला परिमला: प्राग्भार पाट
च्चरा वान्ति क्लान्ति वितान तानव कृ
त: श्रीखंड शैलानिला:॥३६॥

زن رهرو را در موسم بهاری — شود رنج و تعب با هم گریه زاری
درختان را ز نو برگ و زرین گل — سبز و کویل برد چون لاله گل
ز باد پاٹل و خوشبو معطر — بسنت آمد هوا شد خوب خوشتر

رنِ نورا با آن حد می سزد ناز | شمیم صندل آورا تا دهد باز

ऽथ ऋतुवर्णनम
तत्रादौ वसंतस्य

परिमल भृतो वाता: शाखा नवांकुर
कोटयो मधुर विरतोत्कंठावाच:
प्रिया: पिक पक्षिणाम् ॥ विरल सु
रत स्वेदोद्गारा वधू वदने न्दव: प्रस
रति मधौ राज्ञां जातो न कस्य गुणोद
य: ॥३३॥

به خوشبو معتدل بادِ سحر بود
خوشا کویل خوشا رو مه جبین بود
بهار آمد سبب شهوت آرد

به شاخ نوگل و برگ شجر بود
عرق بر رخ ز گرمی حسن افزود
نباشد کس که دل از وی نگارد

मधुरयं मधुरै रपि कोकिला कल
कलै र्मलयस्य च वायुभि: ॥ विर
हिण: प्रणिहन्ति शरीरिणो विप
दि हन्त सुधापि विषायते ॥३४॥

به صاحب شهوتان موسم بهاری
ز بادِ صندل و آواز کوئل
چه باکس این که در موسم بهاری

هلاکت میدهد از ترک و تازی
نمیرد لیکه ماند پاسی در گل
حیاتِ آب گردد آب ماری

دو یکدل را عجب لطف وصال است	به بالعکس این بمرده اتصال است

प्रणय मधुराः प्रेमो द्गाढा रसा दलसा
स्तथा भणिति मधुरा मुग्ध प्रायाः प्र
काशित सम्मदाः ॥ प्रकृति सुभगा वि
स्रम्भार्हाः स्मरोदय दायिनो रहसि कि
मपि स्वैरालापा हरन्ति मृगीदृशाम् ३०

با آهو چشم معشوق به تنها	به شیرین لہجه و ناز و ادا ها
صفاتش را چه گویم خوشتر از خوب	به پیران هم دهد شهوت ز مرغوب
بشیرین گفتگو واقف ز اسرار	به ناکامان رسد از شهوتش بار
تکلف بر طرف از راز پنهان	کرا طاقت که آرد بر لب از آن

आवासः क्रियतां गाङ्गे पापवारिणि
वारिणी ॥ स्तनमध्ये तरुण्या वा म
नो हारिणि हारिणि ॥ ३१॥

به آب گنگ بودن بس که بهتر	تبرا از گنه کهتر و مهتر
و یا با دلربائے نوجوانے	درون در میانے او نهانی

प्रिय पुरतो युवती नां तावत्पद मात
नोतु हृदि मानः ॥ भवति न यावच्चन्दन
तरु सुरभिर्मधु सु निर्मलः पवनः ॥ ३२॥

نمایان عرق رخ شاهد تکانش
به قیمت ورد رسد لب از لبانش

आमीलितनयनानांय:सुरतरसोऽनु
संविदंकुरुते मिथुनैमिथोचधारि
तमावितथमिदमेवकामनिचर्हणम् २७

خمار آلوده وش چشمانش در شوق
وصال او مذاق او با خوب
مذاق او دو سو آب حیات است

وصالش میدهد صد گونه صد ذوق
کند سیری بعاشق خوب مرغوب
حیات از این به تن آب حیات است

इदमनु चितमक्रमश्चपुंसां यदि
ह जरास्यपिमान्मथा विकारा ॥ तद
पिच न कृतं नितम्बिनीनाम् स्तनपत
नावधिजीवित रतंवा ॥२८॥

به پیری پیر را شهوت نه زیبد
به شهوت مرد باید قادر انسان
چو مرد او قبل از لطف وصالش

وگر زیبد زن از وی کی فریبد
فرود آنید پستانش خزان سان
بفهمد فهمدان از راز این بس

एतत्काम फलं लोके यद्द्वयो चित्त
रेकता ॥ अन्य चित्त कृते कामे शव
यो रिव संगम: ॥२९॥

प्राङ्मामेतिमनागमानितगुणंजाताभि
लाषंततः सव्रीडंतदनुश्लथोद्यतमनु
प्रत्यस्तधैर्यंपुनः ॥ प्रेमार्द्रस्पृहणीयनि
र्भररहः क्रीडाप्रगल्भंततो निःशंका
ङ्गविकर्षणादिकसुखंरम्यंकुलस्त्री-
रतम्॥२५॥

بجوش نسلان زبان و صلت لبش خوب   که در برما بیاید خوب محبوب
چو آید پیش خوف از وصل اول   وهم در جنبش بود سیمین مقفل
بشوق عشق او صبر سست در کار   دل بیزار بالاخر بر دستکار
ز بس شرم و اداء خواهش دل   بداند هر که داند خواهش دل
بسینه سینه از لب لب بسته   کمر ساقش ز دستش دست بسته
چو شد مشغول در وصلش به آخر   گره بسته گشاید هم به آخر
حجاب نوعروسی چون بر خاست   به حسن یکدگر مشغول پرداخت

उरसिनिपतितानांस्रस्तधम्मिल्लका
नां मुकुलितनयनानांकिंचिदुन्मील
तानाम् ॥ सुरतजनितखेदस्विन्नगण्ड
स्थलीना मधर मधुवधूनांभाग्यवंतः
पिबंति॥२६॥

به سینه عاشق خود افتاده   خوشا مهرو که گیسویش گشاده
به چشم مست دل عاشق ربوده   نهان از خواهش وصلش فزوده

रयन्तीशशिनोमयूखान् ॥२२॥

کسی تو عمر طالب عاشق خویش
نشنید ایستد بیند رخ ماه
شعاع ماه را اندر جبا در

بزیر شجر نو بسته دل خویش
زجیا در سینه کنا زدست و از آه
دلش سبب تاب چه کل بی آتش آذر

स्पदर्शने दर्शन मात्र कामा दृष्टापरि
ष्वंग रसैकलोभाः ॥ आलिंगितायां पु
नरायताक्ष्या माशास्महे विग्रहयोर
भेदम् ॥२३॥

ندیده خواهش دیدار دارد
چه وصالش شد باید در دل این

چه دیدش روز وصل را شمارد
جدا مکنا و یارب مار ازین تن

मालती शिरसि जृंभणोन्मुखी ॥ चन्द
नं वपुषि कुंकुमान्वितम् ॥ वक्षसि-
प्रियतमा मनोहरा स्वर्ग एष परिशिष्ट
आगतः ॥२४॥

سر از مالتی گلها سبک بود
بسوده زعفران و عطر و صندل
سزد گوییم که حوران بهشت اند

بزلف عنبرین یار دو سر بود
زپستانش معطر خار در دل
نشان آرام جنت در جهان اند

چو نقش پای آهو در ج سیمینی
ولی باید که لال تر گران بار
ز دست خویش بر درجش بدارد

کلیدش لال تر از کان حسینی
که تا مهر و بر و آید ز دل یار
که لطف اندرو فی بر نداارد

मुखेन चंद्र कान्तेन महा नीले शि
रो रुहै ॥ पाणिभ्यां पद्मरागाभ्यां रे
जेरत्नमयीवसा ॥२०॥

رخش چون ماه جعدش عنبری بود
نمایان بود چون حوران جنبت

کف پایش چو گل نیلوفری بود
بگویم کان جواہر تا چه سنت

संमोहयन्ति मदयन्ति विडम्बयन्ति
निर्भर्त्सयन्ति रमयन्ति विषादयन्ति।
एता प्रविश्य सदय हृदय नराणाम्
किं नाम वाम नयनान समाचरंति२१

کند غافل و هم بد مست سازد
به شادی شاد و در سختی بر د ننگ
رود در دل کند ناکر دنیها

کند خوش بعد تلخیش نساید
کمان چشمش به خالد در دل تنگ
زنان کردار سازد کردنیها

विभ्रम्य विभ्रम्य वन द्रुमाणाम् ॥
छाया सुतन्वी विचचार काचित् ॥
स्तनो नरीयेण करो द्धृतेन निवा

واگر خواهش پستان سیمین
تو داری خواهش رخ حوروش را
تو یابی از ریاضت خواهش دل

و ور انلش کیله سان با خانم سیمین
ریاضت کن که یابی حاصلش را
ز نیکی میرسد بر خواهش دل

मात्सर्य मुत्सार्य विचार्य कार्य मार्याः
समर्याद मिदं वदन्तु ॥ सेव्या नित
म्बाः किल भूधराणां मुत स्मर स्मेर
विलासिनीनाम् ॥१८॥

بلا ریب و ریا از کاملان هند
شوم عارف کنم گوشه نشینی

همی پرسم ز انصاف پی پند
و یا با ماه رو بوسه گزینی

संसारे ऽस्मिन्न सारे परि णति तरले
द्वे गती पण्डितानाम् तत्व ज्ञानामृ
ताम्भः प्लुत ललित धिया यातु कालः
कदाचित् ॥ नो चेन्मुग्धाङ्गनानां
स्तन जघन भरा भोग संभोगिनीनाम्
स्थूलोपस्थस्थलीषु स्थगित कर
तलस्पर्श लोलोद्यतानाम् ॥१९॥

درین تا یابد ار دیده دیده بین
شناسد حق و یابد حاصل او
وگر حاصل نه باشد این ز تقدیر

بیاب از عاقلان و یادگار این
ز صحبت نیک باشد حاصل او
شود یا میل به پستان زنان و تدبیر

पमधिकं रोमावलीकेनसा ॥१५॥

ز پستان مدور بار در بر لبان چون غنچهٔ گل سرخ ست و باریک ز شوق عشق تو مارا چو مار اند وسیله بر تو کماند از گل تر نمایان نقش پا ز آهوی چین ست ازین رو هیچ ناید کار از من	روان چشمانش بر و مثل خنجر کند شرمنده گیسو لیل تاریک چه باشد پاک ماهم جان نثار ند نوشته بر جبینت عصمتی بر که بر برگ سمن چون عنبرین ست نمیدانم چرا رنجیدی از من

गुरुणा स्तनभारेण मुखचंद्रेण भा
स्वता ॥ शनैश्चराभ्यां पादाभ्यां रेजेग्रहमयी
वसा ॥१६॥

زبار سینه مرشد مشتری شد چو فیل مست یا چون زحل رفتار	نمایان بدر رخ بهتر ز لیس بد و هر رونق به این هر سه ز گفتار

तस्याः स्तनौ यदि घनौ जघनं वि
हारि वक्त्रं च चारु तव चित्त कि
मा कुलत्वम् ॥ पुरायं कुरुष्व य
दि तेषु तवाभिवाञ्छा पुष्यै विना
नहि भवन्ति समीहितार्थाः ॥१७॥

कुंभ द्वय मियं तान्वि वपु: प्रशांत मपि
नैक्षो भंकरोत्येव न: ॥१२॥

چہ خوش بندی گیسوی چشم فلزاد پیچ است از کوزہ بہ پستان		ز رندان سالک شرمندہ بہزاد ہمی گیرد دل انسان نادان

मुग्धे धानु ष्कता केय मपूर्वा त्वयि
दृश्यते ॥ यया हरसि चेतांसि गुणै
रेव न सायकै: ॥१३॥

کمان ابرو را گفتہ کامی دل افروز		کہ می گیری دل انسان چہ بے سوز

सति प्रदीपे सत्यग्नौ सत्सु तारा रवीं
दुषु ॥ विना मे मृग शावा क्ष्या तमो
भूत मिदं जगत् ॥१४॥

بمانند شمع یا آتش و یا ماہ		ہمہ تاریک بے معشوق رخ ماہ

यद्वक्त्र: स्तन भार एष तरले नेत्रे चले
भ्रूलते रागान्धेषु तदोष्ठ पल्लव मि
दं कुर्वन्ति ना मव्यथां ॥ सौभाग्या
क्षर पंक्ति रेव लिखिता पुष्पा यु
धे न स्वयम मध्यस्यापि करोति ना

زسوده زعفران مالیده تن او دوپستانش چو سیمین خام زیبا فغان خلخال و دل عاشق ربوده	فتاده بر برف تیر نظر او به لرزان ها ز زیر برقعه دیبا نه بوده هر کرا بوده ربوده

नूनं हि ते कवि वरा विपरीत बोधा ये
नित्य माहुर बला इति कामिनी नाम्
॥ याभि र्विलोल तर तारक दृष्टि पातै:
शक्रा दयोपि विजिता स्त्व बला: क
थंता:॥१७॥

سزد گویم اگر بر شاعران هند چه نسبت پهلوان زعارف انسان	که گوید زن را ابلا چون خردمند کند تسخیر در یکدم ز دیوان

नून माज्ञा कर स्तस्या: सुभ्रुवो मक
र ध्वज: ॥ यत स नेत्र संचार सूचि
तेषु प्रवर्तते ॥२१॥

خدنگ نازکش را تیز باشد	غلام او به دل گل نیز باشد

केशा: संयमिन: श्रुते रपि परं पारं
गते लोचने अन्तर्वक्त्र मपि स्वभाव
शुचिभि: कीर्णं द्विजानां गणै: मुक्ता
नां सतता धि वास रुचिरं वक्षोज-

स्वाद्येषु नदोष्ठ पल्लव रस: स्पृश्येषु
किं नतनु: ध्येयं किं नवयौवनसुहृ
दयै: सर्वत्र तद्विभ्रम: ॥७॥

نگاہے عاشقان راچیست مرغوب
ببوسیدن بود خوش با دلبر او
مذاق و لمس از بوس و مساسش

رخ معشوق خوش ہم چشم مرغوب
بہ بشنیدن بود خوش نغمہ او
تصور از جوانی لہو لعبش

राना: स्वल्ल द्धलय संह्रातिमेखलो
त्थ झंकार नूपुर रवा हृत राजहंस्य:
कुर्वन्ति कस्य न मनो विवशं तरू
ण्यो चित्रस्त मुग्ध हरिणी सदृशै:
कटाक्षै: ॥८॥

زنہا را ہم میان زیور و بازو
کند شرمندہ بادہ راج ہنسان
نباشد کس کہ ناید در کمندش

بجنبش آوازئے خلخال نازو
زچشم ناز آہوئے نیستان
ز ذرہ تا قمر گیرد کمندش

कुंकुम पंक कलंकित देहा गौर
पयो धर कम्पित हारा ॥ नूपुर
हंस रणत्पद पद्मा कं न वशीकु
रुते भुवि रामा ॥९॥

य:॥ वक्षोजा विभ कुंभ सम्भ्रमहरौ
गुर्वी नितंब स्थली वाचां हारिच मा
र्दवं युवति षु स्वामाविकं मंडनं ॥५॥

بهر رو جسم نازک چشم طناز
چه نسبت تار و کشش پارا ز کاکل
چه نسبت نارجیل از سر فیل
سرینش را به ترجی از که گوییم
نماید در جوانی در تن خویش

ملاحش هچو زر بل بهتر وزراد
شده شرمنده در باغات سنبل
نخواهد گر ز سینه خویش تمثیل
مثالش نیست مثلی از که گوییم
شکر خارا کجا گردد دل ریش

स्मित किञ्चिद्वक्त्रे सरल तरलो दृष्टि
विभवः परिस्पन्दो वाचामभिनव
विलासोक्ति सरसः ॥ गतीनामारम्भः
किसलयित लीला परिकरः स्पृशन्त्या
स्तारुण्यं किमिह न हिरम्यं मृगदृ
शः॥६॥

جوانی خورده را شیرین بیانی
بود مشتاق برگیرد دل مرد

ادا و ناز و هم لطف نهانی
نماید خویشتن را در جهان فرد

द्रष्टव्येषु किमुत्तमं मृगदृशां प्रेम प्र
सन्नं मुखं घ्रातव्येष्वपि किं तदास्य
पवनः श्राव्येषु किं तद्वचः ॥ किं-

भ्रूचातुर्यात्कुंचिताक्षाः कटाक्षाः स्नि
ग्धा वा चाललज्जिताश्च हासाः ॥ली
लामन्दं प्रस्थितं च स्थितं च स्त्रीणा
मेतद्भूषणं चायुधं च ॥३॥

ز ابرو کمان چون نگه کرد تیز	ز تیر ازل گشت عشاق بیز
تبسم شکر لب ز شرم و ادا	بر رفتار رشد عاشق از دل فدا
نشستن و رفتار چون شیر زن	زنان را سلاح انداز ناز و فن

क्वचित्सुभ्रूभंगैः क्वचिदपि च लज्जा
परिणतैः क्वचिद्भीतित्रस्तैः क्वचिद
पि च लीलाविलसितैः ॥ नवोढाना
मेभिर्वदन कमलैर्नेत्रचलितैः स्फु
रन्नीलाब्जानां प्रकर परिपूर्णा इव
दृशः ॥४॥

عروس نو ز جسم شرم انداز	نماید خویشتن را افسون انداز
چنین مهجبین زنشان چون بدر	ز چشمانش به صعوه یا فتنه قدر
خوشا روی و خوشا ناز و ادایش	خوشا باشد عروس نو شبابش

वक्त्रं चन्द्रविकासि पङ्कज परीहा
सक्षमे लोचने वर्णः स्वर्णमयाक
रिष्णु रालिनी जिष्णुः कचानां च

श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ शृंगार शतकं प्रारभ्यते

शंभुस्वयंभुहरयोहरिणेक्षणानाम् ॥
येनाक्रियन्त सततं गृहकर्मदासाः ॥
वाचामगोचरचरित्रविचित्रताय ॥
तस्मै नमो भगवते कुसुमायुधाय ॥१॥

چو بر بهار بشن شب شد تابع کام
به غیر از زن نه زیبد خانه داری
به زن گویند صاحب خانه خویش
به شیرین گفتگو نازو ادا ها
کنم سجده بآن دادار دل ها

چه ذکر از گفتن انسان تا کام
که دارد بشنو بر بها هم پوراری
پذیرفتن بود فرمان او بیش
رباید دل ز دست پارسا ها
ز گل دارد بستان تسخیر دل ها

स्मितेन भावेन च लज्जया भिया पराङ्
मुखैरर्द्धकटाक्षवीक्षणैः ॥ वचोभिरी
र्ष्याकलहेन लीलया समस्त भावैः ख
लु बन्धनं स्त्रियः ॥२॥

ز ناز و ادا و شکر خندگی
ز گوهر فشانی و شرم و حیا
به لعب و غضب دلربا و فریب

چو ترسان غزاله نظر بندگی
خمیده نظر ترش رو دلربا
رباید دل تا بدان را ز جیبها

अथशृंगारशतक

प्रारम्भः

स्यायतेनत्क्षणात् मेरु: स्वल्पशि
लायते मृगपति: सद्य: कुरंगायते
॥ व्यालो माल्यगुणायते विषरस:
पीयूषवर्षायते यस्यांगेऽखिललो
कवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति ११०॥

خوشا جسمے کہ پر از خصلت نیک
شود دریا چو آب خوردہ جوی
شود شیر دمان آہوے صحرا
شود زہر ہلاہل چون حیات آب

بہ گرد پیش او آتش چو گل نیک
شود کوہے گران چون ریزہ کوہے
شود مار چو گل تسبیح صحرا
شود انہا ہمہ در پیش اصحاب

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव
स्वा मत्यंत शुद्धहृदयामनुवर्त
मानाम् ॥ तेजस्विन: सुखमसून
पि संत्यजंति सत्यव्रतव्यसनिनो
न पुन: प्रतिज्ञाम् ॥ १११॥

صفات شرم را کو سے فزاید
کند وعدہ وفا سازو ہمان دم
باین اوصاف کم باشد درین دیر

چو مادر مہربان کو سے نزاید
زید با کسے بمیر و جان بیکدم
رساند وعدہ را از مہر وفا زقسم

इति नीति शतकम्

स्वायातिकदाचिदेव ॥१०७॥

چو افتد به رنج والم حق شناس ... نگردد ز نیکی کرشتی حق شناس
چو آتش گدا ورا بزیرین نهند ... ولے شعله سر به پروین برند

कान्ताकटाक्षविशिखानदहन्ति
यस्य चित्तेन निर्दहति कोपकृशा
नुताप: ॥ कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न
लोभपाशै लोकत्रयंजयति कृत्स्न
मिदंसधीर: ॥१०८॥

دلے کو ز تیر نگہہ نازنین ... چو بسمل نه افتد برو سے زمین
نه سوزد باو آتش خشم تیز ... نه گیرد ہوو ہوس خشم تیز
شود عابد و زاہد و پارسا ... بگیرد نگہبان ز دست رسا

एकेनापिहिशूरेण पादाक्रान्तंम
हीतलंसू ॥ क्रियतेभास्करेणेव परि
स्फारितंतेजसा ॥१०९॥

چو اقبال یاور به شاہی بود ... به فرمان از ماه و ماہی بود
چو خور کو به یکبره به بیند جہان ... ز اقبال گردد به شاہی نشان

वन्हिस्तस्यजलायतेजलनिधि:कु

عزیز از جان چه باشد اندرین جو
چه دولت در جهان از علم بهتر
به شاهی چیست فوراً حکم تعمیل

زن کو جان نثار د از پے شو
چه آرام ست ترک از سفر بهتر
که سازد هر کس و ناکس به تعجیل

मालतीकुसुमस्येव द्वेगतीह मनस्वि
नः ॥ मूर्ध्निवासर्वलोकस्य शीर्यते
वनएववा ॥१०५॥

به گرد و برد و رو خود سر درین دیر
برارد خاصیت چون مالتی گل

بیفتد در بیابان یا بسر دیر
به فرق مردمان یا پاے در گل

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचना
ढ्यैः स्वदारपरतुष्टैः ॥ परपरिवाद
निहत्तैः काचित्काचिन्मंडिता वसुधाः
॥१६॥

شنو هر که از تلخ گوئے نفور
بگفتار شیرین دل خلق سنج
تو شنو ز کس گفتن بد کسے

و دارد به شکر فشانی وفور
به صحبت زن خویش و هم نکته سنج
به مشکل بیابی باین خو کسے

कदर्थितस्यापिहि धैर्यवृत्ते नश
क्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ॥ अधो
मुखस्यापि कृतस्य वन्हे नाधः शि

کند غواصی یا بر کوه برود
تجارت هر قسم یا علم یا فن
شود ممکن ولے از کلک تقدیر

سپاهی فتح عدو در جنگ برد
پریدن بر فلک از پا دویدن
نگردد بیش و کم از کلک تقدیر

भीमं वनं भवति तस्य पुरं प्रधानं सर्वो
जनः सुजनतामुपयाति तस्य कृत्स्ना
च भूर्भवति सन्निधिरत्नपूर्णा यस्या
स्ति पूर्वसुकृतं विपुलं नरस्य ॥१०३॥

به جسم اول اوشد نیک کردار
زمین شور با وگلزار گردد
به چشم عالمان ممتاز گردد

شود جنگل با وشهر گهربار
ببیند هر کرا جان باز گردد
شنیند هر کجا دربار گردد

को लाभो गुणसंगमः किमुसुखं प्राज्ञेत
रैः संगतिः का हानिः समयच्युतिर्नि
पुणता का धर्म्मतत्वे रतिः ॥ कः शूरो
विजितेन्द्रियः प्रियतमा कानुव्रता किं
धनं विद्या किं सुखमप्रवासगमनं
राज्यं किमाज्ञाफलम् ॥१०४॥

صحبت علماست دولت در جهان
چه نقصان است وقت رایگان صرف
دلاور کیست کو دارد به خود ضبط

صحبت جهلاست رنج در جهان
عقلمند نیست دیدن حق به حق حرف
ز نفس بد کند دریا و حق ربط

بدانا بنزد وقت افتتاح کار
کند گر زنا فهمی خویشتن

که از نیک و بد فهمد انجام کار
خلد خار نا مرگ در زیستن

स्थाल्यां वैदूर्यमय्यां पचति च लश
नं चंदनै रिंधनौघैः सौवर्णै लांगला
ग्रै विलखति वसुधामर्कमूलस्य हे
तोः ॥ छित्वा कर्पूर खंडान्वृतिमिह
कुरुते कोद्रवाणां समंतात् प्राप्ये
मां कर्मभूमिं न चरति मनुजो यस्तपो
मन्दभाग्यः॥१०१॥

نه تاب مرصع و نه طبخ سیر
زقلبه طلائی نشان بر زمین
حفاظت کند کودرم را از و
نه دریا دحق و نه محنت ریاض

زصندل کند هیمه ها سوخت نیز
کند شجر کافور را از زمین
نه داند زه احوال اصلی به او
چه از جسم انسان تا زو نیاز

मज्जत्वंभसि यातु मेरुशिखरं शत्रू
न्जयत्वाहवे वाणिज्यं कृषिसेव
नादि सकला विद्याः कलाः शिक्षतु।
आकाशं विपुलं प्रयातु खगवत्कृ
त्वा प्रयत्नं परं नाभाव्यं भवतीह क
र्मवशतो भाव्यस्य नाशः कुतः॥
॥१०२॥

به جنگ و به صحرا و در آب نیز
بخسپیده جد کوه گران
محافظ شود نیک کردار او

به دشمن به اخگر به دریای تیز
پئے حفظ از داربازان جهان
که گر دست در او لین بار او

यासाधूंश्चखलान्करोति विदुषो मू
र्खान्हितान्द्वेषिण : प्रत्यक्षंकुरु ते
परोक्षममृत हाला हलं तत्क्षणा
त ॥ तामाराधय सत्क्रियां भगव
तीं भोक्तुं फल वांछित हे साधो व्य
सनैर्गुणेषु विपुलेष्व स्थां वृथा मा
कृथा ः॥९९॥

گرفتن رہے نیک دارد اثر
به جہلا و بد صحبت عالمان
اگر زہر باشند با آب حیات
ز اسرار مخفی کند آشکار
اگر طالبے راستی صادقی

بدان را رساند ز نیکی ثمر
که دشمن شود دوست و در جہان
شود دردمی ہمچو آب حیات
کند خواہش نیک انجام کار
ز صحبت رسد راستی صادقی

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्य्यमा
दौ परिणतिरवधार्य्या यत्नतः पंडि
तेन ॥ अतिरभसकृतानां कर्म्मणामा
विपत्ते भवति हृदय दाही शल्य तुल्यो
विपाकः॥१००॥

सूर्य्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै न
मः कर्मणे ॥९६॥

زکردار بر ما بہ بستہ چون کلال
کہ جلوہ بگیرد ندہ شکل خویش
چہا داوہ تکلیف او بشن را
تعین سپہ گردش مہر و ماہ

بہ داد او بہ بشنوے صاحب جلال
تترحم کند بر دل خلق ریش
گدائی بہ شیو کرد او بیشہ را
زما سجدہ کردار را سال و ماہ

नैवाकृतिः फलति नैव कुलं न शीलं
विद्यापि नैव न च यत्नकृतापि सेवा।
भाग्यानि पूर्वतपसा खलु संचितानि
काले फलन्ति पुरुषस्य यथैव वृक्षाः
॥९७॥

نہ صورت و ہنر نہ ذات نجیب
نہ خدمت ز مرشد ریاضت نہ جسم
و زختیکہ برمید ہر در بہار

نہ علم و نہ خویش خونہ وصف عجیب
و ہر کہ در سالقین و مشت چشم
ز قسمت رسد مرد را ہم بکار

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्ण
वे पर्वतमस्तके वा ॥ सुप्तं प्रमत्तं वि
षमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा
कृतानि॥९८॥

بهار ار زنیارد به برگ گل — که بی برگ شد اصلیت او دلیل
نه بیند اگر بوم در روز چشم — گناهی چه از خور چه از نور چشم
چو سیر آب نشد در جهان برشگال — نه آید بهو سیجه قطره زلال
گناهی چه باشد ازینها به میغ — که بارش بقفنا زد و بید ریغ
چو کلک قضا کرد ترقیم حرف — نگردد کم و بیش از نکته حرف

अथ कर्मप्रशंसा ॥
नमस्यामो देवान्ननु हतविधेस्तेपिव
शगाः विधिर्वंद्यः सोपि प्रतिनियतक
र्मैकफलदः ॥ फलं कर्मायत्तं किम
मरगणैः किंच विधिना नमस्तत्कर्म
भ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥९४॥

به پیغمبران سجده باشد روا — چو اینها شوند تابع رهنما
بخود طاقت بخشش و حکم نیست — عبث سجدهٔ ما یا دستان نیست
اگر سجده واجب به برهما شود — ولی او نه خود رهنما باشود
وبهر او ثمر حسب کردار ما — تلافی شود حسب کردار ما
ازان رو بما واجب آمد یقین — بکردار سجود نهیم سر بر زمین

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मां
डभांडोदरे विष्णुर्येन दशावतारग
हने क्षिप्तो महासंकटे ॥ रुद्रो येन क
पाल पाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः

शशिदिवाकरयोर्ग्रहपीडनं गजभु
जंगमयोरपिबंधनम् ॥ मतिमतांच
विलोक्य दरिद्रतां विधिरहो बल
वानितिमेमति: ॥९२॥

همی بینم مار و فیل را در قید انسانی
به دانا عالم و فاضل ز گرسنگی پریشانی

کسوف و خسوف مهر و مه را خوف ثبانی
همی خواهد کند هر اینچه رب کار ربانی

सृजतितावदशेषगुणाकरं पुरुष
रत्नमलंकरणंभुव: ॥ तदपितत्क्ष
णभंगिकरोतिचेदहह कष्टमपंडि
तताविधे: ॥९३॥

چو جان آفرین جان پیدا کند
شود رو نقش در بساطِ زمین
تعجب چرا این فضیلت بداد

به انسان هنر عقل پیدا کند
ولے میرسد از قضا بر زمین
که در دم بباد فنا رو بداد

पत्रंनैवयदाकरीरविटपेदोषोव
संतस्यकिं नोलूकोऽप्यवलोकते
यदिदिवासूर्य्यस्यकिंदूषणं धारा
नैवपततिचातकमुखेमेघस्यकिंदूष
णंयत्पूर्वंविधिनाललाटलिखितंतन्मा
र्जितुंक: क्षम: ॥९४॥

سپاه و فوج او از دیو خاصان
بهشتی مسکن او فیل براق
چو راجه بل عداوت ساخت با او
به این مضبوطی و سامان لعنت
ازین رو قدرت حق شد نمودار
بخدمت رب باید شاد بودن

نه گذرد در حصار او کس آسان
بدولت طاقت یکتایی اوراق
به بین در لمحه قابو ساخت با او
به این خوبی و اسباب لعنت
که سازد آنچه میخواهد به یکبارد
کنزو هر وقت ممکن شاد بودن

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धि: कर्मानुसा
रिणी ॥ तथापि सुधिया भाव्यं सुवि
चार्य्यैव कुर्वता ॥६०॥

اگرچه رسد حسب اعمال اجر
وسے دل پئے نیک اعمال به

وهم عقل باید از و نیک مجر
که از کار نیک است اعمال به

खल्वाटो दिवसेश्वरस्य किरणै:
संतापितो मस्तके ॥ वाञ्छन्देशमना
तपं विधिवशात्तालस्य मूलं गत:
तत्राप्यस्य महाफलेन पतता भ
ग्नं सशब्दं शिर: ॥ प्रायो गच्छति यत्र
भाग्यरहितस्तत्रैव यान्त्यापद: ॥६१॥

چو گل از تاب قمری میرود سایه شجری
به بین گل از پئے تسکین دل رفته بزیر او

ز بدقسمت که گل فتد ثمری سکان شجری
وسے بدقسمتی گل را بسر گل میدهد اجری

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थोम्
हान् रिपुः ॥ नास्त्युद्यमसमो बंधुर्यं
कृत्वा नावसीदति ॥८७॥

همین کاهل وجودی دشمنت درتن نهان تو	میان سبتن پی اذیت برادر به نهان تو

छिन्नोपि रोहति तरुः क्षीणोप्यु
पुनः पचीयते चंद्रः ॥ इति विमृशंतः सं
तः संतप्यन्ते न विप्लुता लोके ॥८८॥

درو شد شجر باز آرد ثمر	به مفلس شبینه رسد کیسه زر
و ماهی کم و بیش گردد مدام	ازین نقل گیرند ذی احترام
ولی رحمتی حق شناس جهان	ندانند ز تکلیف راحت بجان

अथ दैवप्रशंसा ॥

नेता यस्य बृहस्पतिः प्रहरणं वज्रं
सुराः सैनिकाः स्वर्गो दुर्गमनुग्रहः कि
ल हरेरैरावतो वारणः इत्यैश्वर्यब
लान्वितोपि बलिभिर्भग्नः परैः संगरे
तद्व्यक्तं वरमेव दैवशरणं धिग्धिग्वृ
था पौरुषम् ॥८९॥

به اندر آنکه باشد راز دانی	به هیبت مرشد و گرز گرانی

کسی کو صاحب انصاف باشد
و بد او را اگر قارون خزینه
تحفه بر سر رسد یا زنده ماند

برو کس نیک یا بد نام باشد
و یا محتاج از نان شبینه
ولی پا از حد انصاف نه نزاند

भग्नाशस्य करंड पीडित तनो म्लानें
न्द्रियस्य क्षुधा कृत्वा खुर्विवर
स्वयं निपतितो नक्तं मुखे भोगिनः
तृप्तस्तत्पिशितेन सत्वरमसौ तेनैव
यातः यथा लोकाः पश्यत दैव
मेवाहि न्नृणां वृद्धौ क्षये कारणम ॥
॥८५॥

چو مار گرسنه در قید باشد
بگردد نا توان کز دور از حد
تر است موش بند او که نادان
همان ره باشد ش آزاد بودن

و بند او بجانه بید باشد
ولی رازق و بد روزی بشد و مد
همون زر قیمت بهر گرسنه آن
بدست کبر یا کم زیاد بودن

पातितोपि करा घातै रुत्पतत्येव
कंदुकः ॥ प्रायेण साधुवृत्तानां म
स्थायिन्यो विपत्तयः ॥८६॥

ز دستیکه افگند گو بر زمین
کسانیکه نیک اند نیکی شعار

بجنبد سوی رفتن بر ترین
نه رنجند از آفت روزگار

گہی برگ شجر گاہے برنج و طعامہا خوشتر
گہی پوشم ز جبہ یا لباس زرچو شاہانہ
گذارم رنج و راحت را بدل یکسان ہما پیہم

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौ
र्यस्य वाक्संयमो ज्ञानस्योपशमः
श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः
ऽक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्ध
र्मस्य निर्व्याजता सर्वेषामपि सर्व
कारणमिदं शीलं परं भूषणम्
॥८३॥

تواضع بہ شاہان بزیبد مدام
بہ علما ہست جوہر ز طبع سلیم
بہ خیرات از مرد باید شناخت
بحاکم سزد خوی انصاف راست
بہ پابندی مذہب استوار

بمردان نہ گفتن ز خود در کلام
بہ نیکان جوہر بہ طبع حلیم
فقیران را غصہ باید گذاشت
بہ پاکان سزد صاف نیت برست
اگر عاقلی انکساری بدار

निंदंतु नीति निपुणा यदि वास्तुवंतु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथे
ष्टम् ॥ अद्यैव वा मरणमस्तु युगांत
रे वा न्याय्यात्पथः प्रविचलंति प
दं न धीराः ॥८४॥

زنیب و کپول و مغیل و همه به عاشقان حق خود بود این مرام	گرا بور سد صندل این شد همه که سازد چو خود در وسمے الکلام

॥ अथ धैर्यप्रशंसा

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा न भेजिरे भी
मविषेण भीतिं ॥ सुधां विना न प्रयय
विरामं न निश्चितार्थाद्विरमंति धीराः
॥८१॥

نه کرده ترک سودن بهر بر حاصل جواهر و زر
نه کرده ترک از هیبت هلاهل بود کو جان بر
میان بسته چو بهر یافتن آب حیات از وے
گرفت آب حیاتے را میان بسته فزون برتر

क्वचिद्भूमौ शय्या क्वचिदपि च प
र्यंक शयनं क्वचिच्छाकाहारः
क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः ॥
क्वचित्कंथाधारी क्वचिदपि च दि
व्यांबरधरो मनस्वी कार्य्यार्थी न
गणयति दुःखं न च सुखम् ॥८२॥

گهے عریان نه جسم بر زمین یا بر پلنگ بستر

نکو راست خدمت بخاصان کن
بخدمت بعلمان مدارا عدو
ترحم بغربا به جود و سخا

بخدمت بزرگان دل شاد کن
نما خویشتن را اطاعت به خو
با این خو بود نام از تو بقا

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपू
र्णास्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्री
णयंतः परगुण परमाणून्पर्वतीकृ
त्यनित्यं निजहृदि विकसंतः संतिसं
तः कियंतः॥७८॥

زبان و دل و جسمان بزرگنجن
به بهبودی خلق کن شاد دل
به سیرت همین حق شناسان کم اند

کند خوی خود را سراپای عجز
بوصف کسان باش آزاد دل
چو هستند بسیار کم از کم اند

किंतेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव॥
मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण॥
कंकोल निंब कुटजाऽपि चंदना
स्युः॥९१॥

سمیر است یک کوه زر بر زمین
نباشد نزدش شجر هم ز زر
به ملیاگر این خوی ذاتی بود

و کیلاش از نقره شد بر زمین
نزدیکش شجر سیم از دونی ثمر
که از بوی او زار صندل شود

چو دانند شیرست فیاض از دو آب بپاشند بر سر شیر آب آندم	برون آرد سر خود را ز بی تاب نشیند همنشین بیند چو با هم

इतः स्वपिति केशवः कुलमितस्तदी
यद्विषामितश्च शरणार्थिनः शिखरि
णांगणाः शेरते ॥ इतोपि वडवान
लः सह समस्त सम्वर्तको रहो वित
तमूर्जितं भर सहं च सिंधो र्वपुः ७७॥

همی خسپد به یکسو کشن بر شیش بیکسو از گروهی کوه دارد بجوشاند ز آب بحر یکدم بشر فادل شود چون بحر در دیر	شیاطین سوی دیگر جنس بر کیش قیامت آتشش یکسو به دارد ولی در دل نیارد رنج یکدم نه رنجد نه رمد از جهر یا قهر

तृष्णांछिंधि भज क्षमां जहि मदं पा
पे रतिं मा कृथाः सत्यं ब्रूह्यनुयाहि
साधु पदवीं सेवस्व विद्वज्जनम् ॥
मान्यान्मानय विद्विषोऽप्यनुनय
प्रख्यापय स्वान् गुणान् कीर्तिं पा
लय दुःखिते कुरु दयामेतत्सतां ल
क्षणम् ॥७८॥

بکن ترک از حرص و نیکی بگیر	بکن ترک از نفس بد کار نیز

خاصان حق خود بود این چنین	که خواهند بهبود دیگر بر زمین

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये। ते ऽमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे ॥७५॥

کند ہیچ خود در فلاح دگر | خدا دوست باشند و صاحب ہنر
کند کار خود ہم سرانجام خلق | شود در میانے در ایام خلق
کند ہیچ دیگر پے کار خویش | با دشمن گویند محتاج در لیش
رسانند ضرر بے سبب بر کسان | ندانم چہ گوییم باو در جہان

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिला क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः। गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं युक्तं तेन जलेन शाम्यति सतां मैत्री पुनस्त्वीदृशी ॥७६॥

چو آمیزش بہ شیر و آب گردد | جدائی او باو کے تاب گردد
پے گرمی چو بر آتش نہد شیر | بسوزد آب حافظ از پئے شیر

ز حلقهٔ تنزیبد بنا گوش مرد — که زیبد چو علم ز حق گوش کرد
زیاره نه زیبد بسر مرد را — که زیبد ز جود و سخا مرد را
ز صندل تنزیبد فنا دسے بہ بر — که زیبد ریاضت حقیقی ببر

पापान्निवारयतियोजयतेहिताय
गुह्यंचगूहतिगुणान्प्रकटीकरोति
आपद्गतंचनजहातिददातिका
लेसन्मित्रलक्षणमिदंप्रवदन्तिस
न्तः॥७३॥

زکارے بدی منع سازد بدوست — نماید رہے راستی را بدوست
گناہان بپوشد نماید ہنر — باخفاے کوشش کند بیشتر
مددگار در وقت ہر در زوال — کند صرف زر تا بحد کمال
نشانیست از دوست صاحب کمال — مددگار باشد بمال و زوال

पद्माकरंदिनकरोविकचीकरोति
चन्द्रोविकाशयतिकैरवचक्रवा
लं।नाभ्यर्थितोजलधरोपिजलं
ददातिसन्तःस्वयंपरहितेसुकृता
भियोगाः॥७४॥

بشگفد چو گلزار از آفتاب — ہمین طور نیلوفر از ماہتاب
ہم ابر مردگان ما رسانند میغ — که بارد بهر جا خوشا بید رمیغ

स्वसुखान्दुर्ज्जनान्दूषयन्तः सन्तः
साश्चर्य्यचर्य्याजगति बहुमताः क
स्यनाभ्यर्च्चनीयाः ७०

بلندی را از انکساری بگیر
بپهلوے دیگران خوشے کن
ز نرمی و گرمی جهان شاد باش
بگویند خلقت ترا باتمیز

به تعریف نیکان خود خود بگیر
وے خویشتن را فرامش مکن
بدان راه مدارا کن ازاد باش
به سجده رسد مرد و زن ای عزیز

भवन्तिनम्रास्तरवः फलोद्गमैः ॥ नै
वांबुभिर्भूरिविलंबिनोघनाः अनु
द्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभावए
वैषपरोपकारिणाम् ॥७१॥

شجر با ثمر سر نهد بر زمین
نشانهای حق خو بود این چنین
ز جان و ز زر و ز زیور و ملک و مال
نه این شد ز تعلیم حاصل باو

چو پر آب ابرے که بوسد زمین
بکار دگر خود بسوید جبین
کند صرف جان را ز حد کمال
که ذاتی شود این صفاتی باد

श्रोत्रंश्रुतेनैवनकुंडलेनदानेनपा
णिर्नतुकंकणेन ॥ विभातिकायः
करुणापराणांपरोपकारैर्नतुचंद
नेन ॥७२॥

به بین آب را بر سر حالت رسید	نه فهمد گر از روے باید کشید

यःप्रीणयेत्सुचरितैःपितरंसपुत्रोयद्भ
र्तुरेवहितमिच्छतितत्कलत्रम्॥तन्मि
त्रमापदिसुखेचसमक्रियंयदेतत्त्रयं
जगतिपुण्यकृतोलभंते॥
॥६८॥

زن نیک فرزند طاعت پذیر چنین سه ز قسمت میسّر شود	شود دوست در وقت بد دستگیر گر طالع در دهر بهتر شود

एकोदेवःकेशवोवाशिवोवाएकं
मित्रंभूपतिर्वायतिर्वा॥एकोवासः
पत्तनेवावनेवाएकानारीसुन्दरी
वादरीवा॥६९॥

ز شیو کیشو یکے را سجده کن تو به خانه یا به جنگل جائے کن تو	گدا یا شاه یک را دوست کن تو ز زن یا غار کوہے زوجه کن تو

नम्रत्वेनोन्नमंतःपरगुणकथनैः
स्वान्गुणान्ख्यापयंतःस्वार्थान्
संपादयंतोविततमियतरारंभयत्नाः
परार्थेक्षांत्यैवाक्षेपरूक्षाक्षरमु-

तां मंडनमिदम्॥६५॥

خوشا دستی مخیر قابل وصف دہان زیبد گفتن راست بازی سزد دل را باستقبال بودن نزیبد از زر و زیور بخاصان	ز سر در سجدہ خاصان قابل وصف بیازو روز زیبد فتح یابی نہ گوش از علم راز حق شنودن کہ زیبد خوی خوش در حق شناسان

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोम
लम्॥ आपत्सु च महाशैलशिलासं
घातकर्कशम्॥६६॥

ب نرم طبیعت بوقت فلاح	بوقت زبونی بوکوه کلاح

संतप्तायसि संस्थितस्य पयसो नामा
पि न ज्ञायते मुक्ताकारतया तदेव न
लिनीपत्रस्थितं राजते॥ स्वात्यां सा-
गरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जाय
ते प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणाः संसर्गतो दे

با آہن گرم آب پاشند اگر یار ہمان قطرہ بر برگ نیلوفری ہمان در صدف گر بگیرد قرار	نماند از و قطرہ ہم در نظر نماید چو لولوی صافی گہری شود بے بہا لولوی شاہوار

चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्ध
मिदं हि महात्मनाम्॥६३॥

به قایم مزاجی بوقت زوال
شکیب بمحفل تهور بجنگ
چنین خو به نیکان ذاتی بود

نه خود بینی خویش وقت کمال
به نیکان محبت هنرها به جنگ
نه در رنج و راحت صفائی بود

प्रदानं प्रच्छन्नं गृहमुपगते सम्भ्रमवि
धिः प्रियं कृत्वा मौनं सदसि कथनं चा
प्युपकृतेः अनुत्सेको लक्ष्म्यां निरभि
भवसाराः परकथा सतां केनोद्दिष्टं वि
षममसिधाराव्रतमिदं॥६४॥

به خیرات مخفی تو اضح غریب
زنیکی دیگر کند آشکار
به مجلس نشیند گر حقارت وگر
بر فتن بشمشیر بس مشکل است

نه گفتن زنیکی خود از عجیب
نه مغرور از خود کند آشکار
نه چینند نیکان از و بد شمر
به نیکان چنین خوی لبس مشکل است

करे श्लाघ्यस्त्यागः शिरसि गुरुपाद
प्रणयिता मुखे सत्या वाणी विजयभु
जयोर्वीर्यमतुलम्॥ हृदि स्वच्छस्था-
हात्तिः श्रुतमधिगतैकव्रत फ
लम्॥ विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमह

मृगमीनसज्जनानांतृणजलसंतोष
विहितवृत्तीनाम् ॥ लुब्धकधीव
रपिशुना निष्कारण वैरिणो जग
ति॥६१॥

با آهو زاهد و ماهی صفت ذاتی دل ایشان است ولے بی وجه دادن رنج خود ای زحق داده	نگاه و صبر آب اندر جهان رزق ایشان است به جلاد و بد و صیاد کو ناحق به ایشان است

वाञ्छासज्जनसंगमेपरगुणेप्रीतिर्गु
रौनम्रताविद्यायांव्यसनंस्वयोषिति
रतिर्लोकापवादाद्भयम् ॥भक्तिःशू
लिनिशक्तिरात्मदमनेसंसर्गमुक्तिः
खलेएतेयेषुवसंतिनिर्मलगुणास्ते
भ्योनरेभ्योनमः६२॥

بدل خواهش صحبت لائقان ز دل سجده مرشد تصرف بعلم بترسد ز بد گفتن روزگار گرفتن نفس را کند خو بدبیر باین خو شود هر که در روزگار	بدل حظ از دیدن فائقان به صحبت زن خود بآداب و حلم عبادت خدا را بیاد و بکار ز صحبت بدان دور باید گرسیر کنم سجده اورا ز دل بی شمار

विपदिधैर्यमथाभ्युदयेक्षमासद
सिवाक्पटुतायुधिविक्रमःयशसि

رسد نزدیک بے ادبی چو ماند دور بے سوده
بود هر وقت حاضر حکم را فوراً بجا آرد
بجا آرد بجا آرد بجا آرد بجا آرد

उद्भासिताखिलखलस्य विशृंखल
स्यप्राग्जातविस्तृतनिजाधमकर्मवृ
त्तेः दैवादवाप्तविभवस्य गुणद्विषो
स्यनीचस्य गोचरगतैः सुखमास्य
तेकैः॥५९॥

صحبت دون ست بیشک رنج زا
مے نماید اصل هاے خویش را
سیکند خیرات هم جود و سخا

گرچه باشد صاحب گنج و وکا
مثل اشتر بے مهار و روزه خا
لیکه دشمن هست بهر خوش لقا

आरंभगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी
पुरा वृद्धिमती च पश्चात्॥ दिनस्य
पूर्वार्द्धपरार्द्धभिन्ना छायेव मैत्री ख
लसज्जनानाम्॥६०॥

دونان دوستی سازد انجام قلق
چو سایه روز اول کم شود او
دونان دوستی اولین میشود
به نیکان به اول چو کمتر بود

چنان به نیکان سه انجام خلق
چو سایه روز آخر مے فزاد او
به تقضیح آخر قطع مے شود
فزون از فزون روز افزون بود

خلد خارم بدل زین صفت تشویش
که کامل ماه بے انوار گردد
برود خشک نیلوفر نماند
تونگر در ضرر اسم کردن مال
بران در صحبت شاهان نشیند

بگو این نمایم از که تفتیش
زن خویش روز پیری زار گردد
بہ حسن یوسفی این فخر نماند
بزرگ از مفلسی متغیر احوال
ز خون خویش نیکان لقمه چینند

नकश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयोना
मभूभुजाम्॥होतारमपिजुह्वानं
स्पृष्टो दहतिपावकः॥५७॥

تعجب ز شاهان بود انچنان
کنند گر صد سال سجده ز دور

نه دارند الفت بہ کس در جهان
چو آتش بہ گیرد بسوزد حضور

मौनान्मूकः प्रवचनपटुर्वातुलो
जल्पकोवा धृष्टः पार्श्वे वसतिचत
दादूरतश्चाप्रगल्भःक्षान्त्याभीरुर्य
दिनसहिते प्रायशो नामजातः
सेवाधर्मः परमगहनोयोगिनाम
प्यगम्यः॥५८॥

حقے خدمتگذاری را بدان ایجان زحد مشکل
نه ممکن از فقیر و نے مرید و از غلام اشکل
چو خاموشی گزیند بکم گوید هست بیهوده

به اهل فقر میگویند مکار — شکیب را همیدانند فجار
به صاحب حلم میگویند غرور — به اهل صدق میگویند کم زور
به گویا مرد میگویند جاهل — همه را از بدان رنجیست حاصل

लोभश्चेदगुणेन किंपिशुनता यद्यस्ति
किंपातकैः सत्यंचेत्तपसा च किं शुचि
मनो यद्यस्ति तीर्थेन किं सौजन्यं यदि
किं गुणैः सुमहिमा यद्यस्ति किं मंडनैः
सद्विद्या यदि किंजनैरपयशो यद्यस्ति
किंमृत्युना ॥५५॥

به طامع حاجتی عیب دگر نیست — ز نمامی گناهی بیشتر نیست
چه حاجت راستان را با فقیری — دل شان طاهر است اندر امیری
به نیکان نیکوئی کافی همان است — بزرگان را بزرگی گنج شان است
به عالم حاجت دیگر کسان نیست — خباثت لائق مرد زبان نیست

शशी दिवस धूसरो गलित यौव
ना कामिनी सरो विगत वारिजं मु
ख मनक्षरं स्वाकृतेः प्रभुर्द्धन प
रायणः सतत दुर्गतः सज्जनो नृपा
गण गतः खलो मनसि सप्त शल्या
नि मे॥
॥५६॥

बंधुजनेष्वसाहिष्णुता प्रकृतिसिद्ध
मिदं हि दुरात्मनाम् ॥५२॥

بدان را هست اینک قلب رتی خوی
ز زر و زن دیگران مرعوب باشد

تظلم بی سبب با دشمنی خوی
ز بهبودی دگران شاق باشد

दुर्ज्जनः परिहर्त्तव्यो विद्यया भूषि
तोपिसन् ॥ मणिनालंकृतः सर्प्पः
किमसौनभयंकरः ॥५३॥

چو بد با علم شد یا صاحب زر
چیرا ار یکه باشد صاحب بن

خطر باشد ز قرب بس با تونگر
بترسد صحبتش را صاحب فن

जाड्यं ह्रीमति गण्यते व्रतरुचौ दंभः
शुचौ कैतवं शूरे निर्घृणता मुनौ वि
मतिता दैन्यं प्रियालापिनि तेजस्वि
न्यवलिप्तता मुखरता वक्तर्य्यशक्तिः
स्थिरे तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणि
नां यो दुर्ज्जनैर्नांकितः ॥५४॥

بدان را جنیدی کار دگر نیست
بصاحب شرم گویند از حیا دات
بها در شخص را گویند قاتل

کدام است آن که زیشان بیخطر نیست
بروزه دار از فاسد خیالات
بصاحب نفس میگویند باطل

त्वमेव चातकाधारो सीति केषां नगो
चरः ॥ किमंभोदवरास्माकं कार्प
ण्योक्तिः प्रतीक्ष्यते ॥५०॥

تو ئی جان بخش موسیچه بهران
به عاجز باید قطره بداذن

چرا در انتظاری عاجزان
که میبارد بهر جا ابر نیسان

रे रे चातक सावधान मनसा मित्र क्ष
णं श्रूयतां अंभोदा बहवो वसंति ग
गने सर्वेपि नैतादृशाः ॥ केचिद्वृष्टि
भिरार्द्रयंति वसुधां गर्ज्जंति केचि
द्वृथा यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुर
तो माब्रूहि दीनं वचः ॥५१॥

بکن موسیچه این پند مرا گوش
نباشد ابر نیسان در همه جا
بسا ابری که بارد بر زمین آب
یکی بارد یکی خالی کند رعد
مکن اظهار عجز خود بهر ابر

نباشد در همه ابر آسمان جوش
که بر هم باشد و خالی بجا ها
بسا ابری که نآرد بر زمین آب
یکی را می برد خالی ز جا باد
مکن بر نغمه سنجیهای خود صبر

॥ अथ दुर्जननिंदा ॥
अकरुणत्वमकारणविग्रहः पर
धने परयोषिति च स्पृहा ॥ सुजन

گهی در زر وگهـ به تدبیر زر | گهی صرف گاهی به تسخیر زر

विद्याकीर्तिः पालनं ब्राह्मणानां ॥
दानं भोगो मित्र संरक्षणं च ॥
येषामेते षड्गुणा न प्रवृत्ताः ॥
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ४८॥

به شاهان نشستن نه شاید باو | نه دارد ازین شش که در خوی او
بفرمان حاضر مخیّر بمال | محافظ بخویشان همه نیک حال
به حفظ برهمن کند جان صرف | به شهوت چنان کز وی گیرد نه حرف

यद्धात्रा निजभालपट्टलिखितं स्तो
कं महद्वा धनं तत्प्राप्नोति मरुस्थ
लेपि नितरां मेरौ ततो नाधिकम् ॥
तद्धीरो भव वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं
वृथा मा कृथाः कूपे पश्य पयोनि
धावपि घटो गृह्णाति तुल्यं जल
म् ॥४९॥

چو خالق به کلک قضا نقش بست | نه گردد کم و بیش از هر چه هست
اگر او به هر ملک پیدا شود | دگر کوه زر بهر وی پیدا شود
پس ای دل چرا مستقل نیستی | که از بهر زر پیش دون ایستی
ز دریا سبو چند که آب آورد | همون قدر از چاه آب آورد

स्थावस्तूनि प्रथयति च सङ्कोचयति
च ॥४५॥

چو مفلس که سرمایه یابد بسی	بداند همه خلق را چون خسی
نه یکسان شود شکل در روزگار	که دنیا است فانی و ناپایدار

राजन्दुधुक्षसि यदि क्षिति धेनुमेनां
तेनाघ वत्स मिव लोकममुं पुषाण ॥
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नाना फलैः फलति कल्पलतेव भूमिः
॥४६॥

نصیحت بکن گوش ای نامدار	زمین را چو خواهی گرفتن بکار
بکن پرورش بر جهان همچو پور	زمین بر دهد حسب خواهش ضرور

सत्यानृता च परुषा प्रिय वादिनी
च हिंस्रा दयालुरपि चार्थपराव
दान्या ॥ नित्यव्यया प्रचुरनित्य
धनागमा च वेश्यांगनेव नृपनी
ति रनेकरूपा ॥४७॥

به شاهان سزد خاصیت همچو حور	گهی نرم گاهی شود ترش و شور
گهی لغو گاهی ره راستی	گهی قتل و گاهی رحم آشتی

दानंभोगोनाशस्तिस्रोगतयोभवन्ति
वित्तस्य ॥योनददातिनभुंक्तेतस्यतृ
तीयागतिर्भवति ॥४३॥

ز زر حالت سه باشد اندرین دار
نه در عشقی نه در خیرات از مال

یکی عشق ز خوبان دیگر ایثار
فتد در غم چو نابود شان مال

मणि:शाणोल्लीढ:समरविजयीहे
तिनिहतोमदक्षीणोनाग:शरदिस
रित:श्यानपुलिना: ॥कलाशेष
श्चन्द्र:सुरतमृदिताबालललना:
तनिम्नाशोभन्तेगलितविभवाश्चा
र्थिषुजना: ॥४४॥

جواهر که بسان خورده باشد اگر
فتحیاب جنگی که افتد بغار
نه زیبد لب دریا سپه رود چو
چو بی زر نزیبد به زر دارها

نه زیبد چو فیلی که آید بسر
نه زیبد چو ماهی دویم در شمار
چو کم بسن زن گر شود مرد خو
گدائی نه زیبد به زر دارها

परिक्षीण:कश्चित्स्पृहयतियवानां
प्रसृतयेसपश्चात्संपूर्णकलयति
धरित्रींतृणसमां ॥अतश्चानैका
न्त्याद्गुरुलघुतयार्थेषुधनिनामव

ز زر خویش گلو و ز زر خویش لقا
چو بی زر شود شخص در روزگار

ز زر در جهان باشد از وی بقا
نه پرسد بجز مهره او را بکار

यस्यास्तिवित्तंसनरःकुलीनःसप
ण्डितःसश्रुतवान्गुणज्ञः॥सए
ववक्तासचदर्शनीयःसर्वेगुणाः
काञ्चनमाश्रयन्ति॥४१॥

ز زر حسن و صورت بزرگی ز زر
ز زر صرف نحوست و گویا ز زر

ز زر عقل و دانش هنر هم ز زر
که باشد همه فعل در شکل زر

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यतियतिःसं
गात्सुतोलालनात् विप्रोऽनध्यय
नात्कुलंकुतनयाच्छीलंखलोपास
नात्॥ह्रीर्मद्यादनवेक्षणादपिकृषिः
स्नेहःप्रवासाश्रयान्मैत्रीचाप्रणया
त्समृद्धिरनयात्त्यागात्प्रमादाद्धनम् ४२

ندیمی که بد عقل سازد زوال
مروت کند پور را بی ادب
به غیر علم برهمن ضایع شود
ترد ز غفلت حیا از خمار
تکبر و بی احتیاطی مدام

به شاهی فقیری ز صحبت اهال
کند قطع نسل چو باشد کذب
ز صحبت بدان شرم ضایع شود
ز غربت مروت مروت ز عار
زنا رکس کند دولت او خرام

घयस्तेजसो हेतुः ॥३८॥

چو گرده شیر باسد لیکه بر فیل نباشد علم و جسته تیزی او		بلا خطره کند حمله به تعجیل که حق ذاتی صفت داده به تن او

जातिर्यातु रसातलं गुणगणस्तस्या
प्यधो गच्छतां शीलं शैलतटात्पत
त्वभिजनः सन्दह्यतां वह्निना ॥ शौर्ये
वैरिणि वज्रमाशु निपतत्वर्थोऽस्तु नः
केवलं येनैकेन विना गुणास्तृणलव
प्रायाः समस्ता इमे ३९

رود ذات در پرده زیر زمین زخویشان اقارب با آتش فتند و لے ز زیبا یدبستم ضرور		رود علم و هم خوئے خوش در زمین تهور شود زیر گل در کند که بے زر شود تهمتن اهچو مور

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव क
र्म सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदे
व ॥ अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः
स एव त्वन्यः क्षणेन भवतीति वि
चित्रमेतत् ॥४०॥

ز زر دست و پا باشد و هم سبیل		ز زر عقل و همت ز زر خو نجیل

زمین را شیش بر سر خویش دارد ز بیرحمی دهد بیجرا و نه خنزیر	ورا باخته به نیفشت خود گذارد نداند بر آن ز اصلی را کسی پیر

वरंपक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकु
लिशप्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गा
रिगुरुभिः ॥ तुषाराद्रेः सूनोरहह हपि
तरिक्लेशविवशे नचासौसंपातः
पयसिपयसांपत्युरुचितः ॥२६॥

چو پور هاله به پرواز شد نگیرد ز چو او پر همه آله برید چه خوش بود به بلند شدن بال او	به اندر ازوی این حرکت شاق شد همان گر ز بر پدر او هم کشید که با بجز شیرین هنر خواست او

यदचेतनोऽपिपादैः स्पृष्टः प्रज्वल
तिसवितुरिनकान्तः ॥ तत्तेजस्वीपु
रुषः परकृतविकृतिंकथंसहते ॥२७

جمادی قسم باشد شیشه را همینک صاحب زر عز و اقبال	ز فیض مهر گردد آتشش را نمی بیند ز کس نقصان افعال

सिंहः शिशुरपि निपतति ॥
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ॥
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां नखलु

कुसुमस्तवकस्येवद्वयीवृत्तिर्मन
स्विनाम्॥मूर्ध्निवासर्वलोकस्यवि
शीर्येतवनेऽथवा॥३३॥

بود هر دو شق مثال پاکان تمام
چو گل در بیابان که بر فرق عام

सन्त्यन्येपिबृहस्पतिप्रभृतयःसंभा
विताःपञ्चषाःस्तान्प्रत्येषविशेषवि
क्रमरुचीराहुर्नवैरायतेद्वावेवग्रस
तेदिनेश्वरनिशाप्राणेश्वरौभासुरौ
भ्रातःपर्वणिपश्यदानवपतिः शी
र्षावशेषीकृतः॥३४॥

به جنت مشتری وار هند بسیار
که او سردار را ز دیوان باشد
به جنگ هر کس که ماند نیم جان خاک

ولی راهو نیاز دد شمن کار
بماه و مهر جنگ او شان باشد
سزاوار انشانیدن ته خاک

यद्वातिभुवनश्रेणीशेषःफणा फ
णाफलकस्थितां कमठपतिनामध्ये
पृष्ठंसदासचधार्यते॥तमपिकुरु
तेक्रोडाधीनंपयोधिरनादरा दहह
महतांनिःसीमानश्चरित्रविभूतयः
॥३५॥

तये ॥ सिंहोजंबुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वानिहंति द्विपं सर्वः कृच्छ्रगतो ऽपि वाञ्छतिजनः सत्वानुरूपं फलं ३०

به بین کلب خشک استخوانے خورد
وسے شیر هرگز شغالان را
چو نیچه زندان شجاعت شعار
همین طور نیکان بوقت زبون

همه عمر خود را بسر مے برد
نه گردد پے لقمه خوان را
ز پیل دمان هم در آزرده ار
ندارند پا را ز جاده برون

लांगूलचालनमधश्चरणावपातं भूमौनिपत्यवदनोदर दर्शनंच ॥ श्वापिंडदस्य कुरुतेगज पुङ्गव स्तु धीरं विलोकयति चाटुशतैश्च भुंक्ते ॥३१॥

سگے عاجزی خویش ظاهر کند
وسلے پیل خود را نه سازد ذلیل

رخ و بطن خود را نمایان کند
خورد نان هم از خوشامد قلیل

परिवर्तिनि संसारे मृतः कोवान जायते ॥ सजातोयेनजातेनयाति वंशः समुन्नतिम् ॥३२॥

کدام است آن کو نه مرد و نزاد

همان ماند کز نسل او شد زیاد

प्रियान्याय्यावृत्तिर्मलिनमसुभङ्गेप्य
सुकरं त्वसंतो नाभ्यर्थ्याः सुहृदपि
नयाच्यः कृशधनः ॥ विपद्युच्चैः स्थ
येंपदमनुविधेयंचमहतां सतांकेनो
द्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् २८

کند علم را روزی خود کسے
بخویشان مفلس ندارد سوال
رہے راستی را نخواہد گذاشت

ز دونان نخواہد گرفتن کسے
بوقت زبونی نگردد ز حال
که این خوئے خوش در سرشت او گماشت

क्षुत्क्षामोऽपि जराकृशोपि शिथिल
प्रायोपि कष्टांदशामापन्नोपि विप
न्नदीधितिरपि प्राणेषु नश्यत्स्वपि
॥ मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुम्भकवलग्रा
सैकबद्धस्पृहः किंजीर्णं तृणम
त्तिमानमहतामग्रेसरः केसरी ॥२९

اسد گر گرسنه پیر گردد اگر
زکاه کہن او نه سازد بسر

شود لاغر و جان بلب هم مگر
که خواهد ز پیل دهان لقمه سر

स्वल्पस्नायुवसावशेषमलिनंनि
र्मांसमप्यस्थिगोः ॥ श्वालब्ध्वा
परितोषमेतिनतुतस्यक्षुधाशां

नं युवतिजन कथा मूकभावः परेषाम्
तृष्णास्रोतो विभङ्गो गुरुषु च विन
यः सर्वभूतानुकम्पा सामान्यः सर्व
शास्त्रेष्वनुपहतविधिः श्रेयसामेष
पंथा ॥२६॥

حذر از بد ربا ز دیگران
به دیگرزنان نیز از حرص آز
ز خدمات مرشد شود بهره یاب
ترحم بر د جانیان های دیر
بدل باش مشغول علم عمل

نماید خدا دوستی را عیان
نه دوزد نظر صاحب اختیار
کند بذل زر حسب مقدور باب
همه علم دان کند کار خیر
که در کار توره نباید خلل

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति म
ध्याः ॥ विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रति
हन्यमानाः प्रारभ्य चोत्तमजनाः
न परित्यजन्ति ॥२७॥

کمینه نیست همت از پئے کار
شروع سازد چو شخصے در میانے
اگر افضل میان بند و پئے کار
بود آسان و یا مشکل نماید

نیچی بند و میان تار نیست زنهار
گریزد بیند از کار گرانے
نه تا مد رو از و تار نیست زنهار
که مشکل پیش او آسان تر آید

زصحبت نیک باشد صیقل عقل زصحبت نیک در دارین آرام	زصحبت نیک باشد داستان نقل زصحبت نیک باشد حاصل کام

जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कवी
श्वराः॥ नास्ति येषां यशः काये जरा
मरणजं भयम्॥२४॥

مقدس جسم کو از پیری و مرگ	نه ترسند اندرین راهم چو یک برگ

सुनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी
प्रसादोन्मुखः स्निग्धं मित्रमवञ्चकः
परिजनो निः क्लेश लेशं मनः॥ आका
रो रुचिरः स्थिरश्च विभवो विद्यावदा
तं मुखं तुष्टे विष्टपहारिणीष्ट दहरौ
संप्राप्यते देहिना॥२५॥

چو رازق رضامند گردد ز کس زن نیک و فرزند صاحب تمیز نکو بیشان خویش جسم عیب پاک ز علم و هنر نور چهره منیر	بسی نعمت او را دهد در نفس همه آقا رضامند و مشفق عزیز نباشند زر در دو الم هولناک چنین کس ز شاهان بود بی نظیر

प्राणाघातान्निवृत्तिः परधनहरणे-
संयमः सत्यवाक्यं कालशक्त्या प्रदा

خلیقان را ضرورت ترکشی نیست	به بدخلقان ضرورت دشمنان نیست
به جنس خود اگر داری تو صحبت	نخواهد شد ترا آتش ضرورت نیست
اگر بیهوده داری با مروت	نیفتد با دو آیت هیچ حاجت
به بد صحبت چه خوف از مارها زیاد	غنی ترکیبست در گیهان اسواد
ز زیور رونق شرم و حیا نیست	بگویا حاجت مالک مکان نیست
به همجنسان ضرورت آشتی نیست	به حمدردان ضرورت داروی نیست

दाक्षिण्यं स्वजने दया परजने शाठ्यं
सदा दुर्ज्जने प्रीतिः साधुजने नयो नृ
पजने विद्वज्जनेष्वार्ज्जवम् ॥ शौ
र्य्यं शत्रुजने क्षमा गुरुजने नारीजने
धूर्त्तता ये चैवं पुरुषाः कलासु कु
शलास्तेष्वेव लोकस्थितिः ॥२२॥

بخویشان خود و با دیگر کسان مهر	به نیکان نیکوئی و با بدان قهر
به شاهان عجز با علمان رهی راست	تهور با عدو با زن مدارات
بکن خدمات مرشد با دل شاد	هر دمی دهر ماند از تو این یاد

जाड्यं धियो हरति सिंचति वाचि स
त्यं मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरो
ति ॥ चेतः प्रसादयति दिक्षु तनो
ति कीर्तिं सत्सङ्गतिः कथय किं न क
रोति पुंसाम् ॥२३॥

هنر هست گنجینهٔ لا زوال
هنر رونق جسم و جان میکند

هنر پیش شاهان رساند کمال
هنر شهرت در جهان میکند

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छ
न्नगुप्तं धनं विद्या भोगकरी यशः सु
खकरी विद्या गुरूणां गुरुः॥ विद्या
बंधुजनो विदेशगमने विद्या परं दै
वतं विद्या राजसु पूजिता नाहि धनं
विद्याविहीनः पशुः २०॥

هنر حسن مردم عیان میکند
هنر عیش و آرام هاے دهد
هنر هست سرشد هنرها ز خویش
قدر میکند پیش سلطان هنر
بود قدر مردم ز علم و هنر

زر نقد خود را نهان میکند
هنر وصف انسان نشان میدهد
نگهبان هنر باشد از دور و پیش
بغیر از هنر هست ناسخ مجبر
بشر بے هنر هست چون جانور

क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं किमरिभिः क्रो
धोऽस्ति चेद्देहिनां ज्ञातिश्चेदनलेन
किं यदि सुहृद्दिव्यौषधैः किं फल
म्॥ किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः किमु धनैर्वि
द्याऽनवद्या यदि व्रीडा चेत्किमु भूष
णैः सुकविता यद्यस्ति राज्येन कि
म्॥२१॥

خدا دوست را با نگاهِ حقیر نه دید و خوبرویان نه از سیم و زر چو پیلِ دمان گو به گردد بدشت	ببین گو شود را ز دارد فقیر نه بیند در دلِ خویش با آن بشیر نه استد ز شاخِ کنون او زگشت

अम्भोजिनी वन निवास विलास मेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधा
ता ॥ नत्वस्य दुग्ध जल भेद विधौ
प्रसिद्धां वैदग्ध्य कीर्तिमपहर्तुमसौ
समर्थः ॥१८॥

چو بر هما شود خشمگین هنس را ولے خوئے ذاتی که دارد ببر عجب جوهری داد او را خدا	کند خشک باهم چشمه خلزا درا نبوغی ز طبعش نه گردد بدر کند آب از شیر فوراً جدا

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं हारा न
चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं न विलेपनं
न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः ॥ वा
ण्येका समलंकरोति पुरुषं या सं
स्कृता धार्यते क्षीयन्ते खलु भूषणा
नि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥१९॥

نه بازو کند زینت مرد را ضیاء ز صندل نه تسبیح دُر	نه غسل که شوید ره گرد را نه گلهائے خوشرنگ زلفین جعد

قیامم بر حبا کند عالم همه دان
نشود ظاهر ز علم و دانشش و عقل
ز افلاسش نه گردد هیچ کم علم
فروشد جوهری ارزان چو نادان

و بد تعلیم طفلان سبق خوان
بماند گر گرسنه او گرچه بی نقل
نزیبد شاه را افلاسش از حلم
نه گردد اصل آن کم مطلقا زان

हर्तुर्याति न गोचरं किमपि शं पुष्णा
ति यत्सर्वदा ह्यर्थिभ्य प्रतिपाद्यमा
नमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं परां ॥ कल्पां
तेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्य
मंतर्द्धनं येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृ
पाः कस्तैः सह स्पर्द्धते १६

برهمن که دارد بدل یاد رب
نه زیبد ز شاهان تکبر باد
به طلبا کند وقف علم و هنر
به افزایش علم مصروف کار

پئے علم باشد با دتاب و تب
که آگاه حق هست و هم نیک خو
نه دزدے بگیرد از و یک شر
ازین به نباشد درین روزگار

अधिगत परमा र्थान्पण्डितान्माव
मंस्था स्तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव ता
न्संरुणाद्धि ॥ अभिनवमदलेखा-
श्याम गण्डस्थलानां न भवति बिस
तन्तुर्वारणवारणानामू ॥१७॥

بسا خر و دم شود فرق ز حیوان		بشکل مردمان باشند انسان

येषां न विद्या न तपो न दानम् ज्ञा
नं न शीलं न गुणो न धर्मः ॥ ते मर्त्य
लोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण
मृगाश्चरन्ति ॥१३॥

نه اہل حقیقت نه دانا سے علم نه تعلیم مرشد نه جود و سخا اگرچه کشده شان در مردمان		ریاضت نه خیرات نے طبع حلم چو بار زمین آمد آن بے حیا ولے خوے شان ہست شکل دوان

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ॥
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि १४

بکوه بیابان به همراه دد		به است از بهشت که با بے خرد

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शि
ष्यप्रदेयागमा विख्याताः कवयो
वसन्ति विषये यस्य प्रभोर्निर्धनाः ॥
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो
ह्यर्थं विनापीश्वराः कुत्साः स्युः कु
परीक्षका हि मणयो यैरर्घतः पातिता ॥१५॥

چو گنگا ز جنت بر آورد سر	بہ فرق مهادیو شد جلوه گر
وز آنجا بکوه هماله رسید	زمین پاک گرده بدریا رب
چو شد نزل او از فلک بر زمین	ز دریا فرو شد بزیر زمین
کسی کو زمعبود دارد نه یاد	فنا میشود زود در حد ص باد

शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक्छत्रे
ण सूर्यातपो नागेन्द्रो निशितांकुशे
न समदो दण्डेन गोगर्दभौ ॥ व्याधिर्भे
षजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्वि
षम् सर्वस्यौषधमास्ति शास्त्रविहि
तं मूर्खस्य नास्त्यौषधं ॥११॥

نه آب آتش گرم گردد فرو	بود پرتو مهر در ظل گرو
نشو فیل مست از کمچک چو علام	خرو گاو از چوب گردد بدام
پئے درد درمان بود پیر اثر	بماران کثر دم فسون کارگر
ولے سحر جهلا ز پیر و ر دگار	نه شد داروے نافع ساز گار

साहित्यसंगीतकलाविहीनः सा
क्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ॥ तृ
णं न खादन्नपि जीवमानः तद्भाग
धेयं परमं पशूनाम् ॥१२॥

ز راند معنی و منطق نه ز آن کس	نه نظم و نثر لیس لقمتش بر آن کس

مرا چون شد گمان بر دانش خویش
به فهمیدم که من هستم همه دان
چو بنشستم به نزد عارفان باز
همان دم دور شد از من غرورم

بگردیدم چو فیل مست دل ریش
بشد طبعم جهالت خو بمیدان
بدانستم ز حمق خویشتن راز
چو آمد هوش کل حاصل شده مرورم

कृमिकुलचितंलालाक्लिन्नंविगंधि
जुगुप्सितम् निरुपमरसंप्रीत्याखा
दन्नरास्थिनिरामिषम् ॥ सुरपति
मपिश्वापार्श्वस्थंविलोक्यनशङ्क
ते नहिगणयतिक्षुद्रोजन्तुःपरिग्र
हफल्गुताम्॥९॥

سگی کو خورد استخوان کهن
بیابد ز لذت مفت خوان
همین طور شخص حماقت شعار

چو او تر شود از لعاب دهن
نداند وسیلے را از اصلی نشان
نه تابد ز شهوت پئے یادگار

शिरःशार्वंस्वर्गात्पशुपतिशिरस्त
क्षितधरं महीध्रादुत्तुङ्गादवनिम
वनेश्चापिजलधिम् ॥ अधोगङ्गासे
यंपदमुपगतास्तोकमथवा विवे
कभ्रष्टानांभवतिविनिपातःशतमु
खः॥१०॥

मधुविन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीह
ते नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां
सूक्तैः सुधास्यंदिभिः॥

ز نیلوفرے بار گیرد ظہور
کند چاک خارا گل برگ نور
و لے از دوا ہیچ در روزگار

کہ پیل دمان بند سازد بغور
شود شیرین از قطرہ بحر شور
نہ بخشد نفع از پئے عقل خوار

स्वायत्तमेकांतगुणं विधात्रा विनि
र्मितं छादनमज्ञतायाः॥ विशेषतः
सर्वविदांसमाजे विभूषणं मौनमप
ण्डितानाम्॥७॥

تنہا نشیند اگر بے شعور
گزیند خموشی بہ پیش وقار

گر آگاہ گردد ز حال [illegible]
نگردد بمجلس حال او آشکار

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदांधः
समभवं तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवद
वलिप्तं मम मनः॥ यदा किंचित्किं
चिद्बुधजनसकाशादवगतं तदा मू
र्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपग
तः॥८॥

نه دانا فهمد از اشان گفتن چو دانا هیچ باشد از دان کار	که دانا داند از راز نهفتن ز بهر مصاف هم نفهمد ما کار

मसह्यमणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रांकु
रात् समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमा
लाकुलम् ॥ भुजङ्गमपि कोपितं शिर
सि पुष्पवद्धारयेत् न तु प्रतिनिविष्ट
मूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥४॥

توان از نهنگان برآورد دُر توان مار را داشتن هم بسر	توان کرد بر بحر پیاده گذر نه فهمد ولی هیچدان از خبر

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पी
डयन् पिबेच्च मृगतृष्णिका सु सलि
लं पिपासार्दितः ॥ कदाचिदपि पर्य
टन्शशविषाणमासादयेत् न तु प्र
ति निविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ५

توان از زمین روغن در کشید توان یافت شاخ از بت از کوه و دشت	ز ریگ روان آب آید پدید نه فهمد ولی هیچدان سرگذشت

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं
समुज्जृम्भते छेत्तुं वज्रमणीञ्छिरी
षकुसुमप्रान्तेन सन्नह्यते ॥ माधुर्यं

॥श्रीगणेशायनमः॥

नीतशतकंप्रारभ्यते

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्र
मूर्तये॥ स्वानुभूत्येकसारायनमः शा
न्तायतेजसे॥१॥

کنم سجدہ ذوالجلال و حلیم نیاز و کسی وصف او در شمار	کہ او را نہ پوشیدہ حیات گلیم ہویدا ست از صنعت روزگار

यांचिन्तयामिसततंमयिसाविरक्तासा
प्यन्यमिच्छतिजनंसजनोऽन्यसक्तः॥
अस्मत्कृतेचपरितुष्यतिकाचिदन्या
धिक्तांचतंचमदनंचइमांचमांच॥२॥

زنی را کہ میخواستم ہمچو جان ہمون ربط دارد بدیگر زنے تبرا برا نہا بما نیز ہم	ہمے دارد او انس با دیگران ہمان زن بجوید مرا از ہمہ تبرا بہ عشق زنان نیز ہم

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्य
तेविशेषज्ञः॥ ज्ञानलवदुर्विदग्धंब्रह्मा
पिनरंनरंजयति॥३॥

॥ श्रीगोपालोजयतितराम ॥

بھرتری ہری شتک

متن معہ ترجمہ فارسی نظم

مرتبہ جناب راجہ گھنشیام سنگھ صاحب بہادر رئیس مرسان ضلع علیگڈھ

भर्तृहरिशतक

फारसी अनुवाद सहित

श्री युत राजा घनश्याम सिंह साहिब बहादुर
रईस मुर्सानकृत

مطبوعہ مطبع شیام کاشی متھرا باہتمام لالہ شیام لال مالک مطبع

यन्त्रालय श्याम काशी मथुरा में लाला
श्याम लाल के प्रबंध से
छपा.

۲۲۱۵۱۱۹۸

۵۳۲

[illegible]

Date	No.	Date	No